bible educational services

शिक्षक केलिए दिशा-निर्देश

बाइबल टाइम लेवल 3 & 4

A सीरीज़

पाठ 7-12

bes INDIA
bible educational services

P.O Box - 9, MOOKANNUR P.O., 683577, Ernakulam, KERALA
E-mail : besindia1@gmail.com, www.besweb.com

शिक्षक केलिए दिशा- निर्देश।

यह दिशा-निर्देश उन शिक्षकों केलिए प्रकाशित किए है जो बाइबल टाइम सिखाते है। इस पुस्तिका को लेवल 3 लगभग 5-10 के आयु के बच्छो को पठाने में इस्तमाल कर सकते है।

हर एक टिचिन्ग गाइड में वही बाइबल पद का अनुकरण किया है जो बाइबल टाइम पाठ में दिए गए है। बाइबल टाइम पाठ और गाइडलाइन्स साप्ताहिक आधार पर उपयोग करने केलिए बनाया गया है। आप्रैल के पाठ क्रिस्मस से सम्बन्धित है।

कई क्षेत्रों में A4 पाठ और दूसरे क्षेत्रों में A5 पुस्तिका को जिसमे 24 पाठ शामिल है असका उपयोग करते है। आम तौर पर शिक्षक A4 मासिक पाठ का वितरण करेंगे ओर एक हफ्तें में एक पाठ को विध्यालय, गिरिजाघर, या अपने घर ले जाकर पूरा करके वापस लौटाना चाहिए। हर महीने के अन्त में शिक्षक पाठ को इकट्ठा करके जाँचने के बाद जल्द ही लौटाना चाहिए।

आदर्शरूप में पुस्तिका इस्तमाल करते वक्त सत्र के अन्त में जाँच करने केलिए इकट्ठा करते है। हम समझ सकते है कि कई परिस्थितियों में यह असम्भव है। ऐसे स्थिति में पुस्तिका को कक्षा के दुसरे बच्चों में वितरण करके उन से जाँच करवाया जा सकता है। पुस्तिका के पीछे हर महीने का अन्क लिखने और बच्चों की प्रगति के बारे में टिप्पणी लिखने का स्थान दिए गए है। एक प्रमाण पत्र भी है जिसे अलग करके छः महीनों में प्राप्त किए कुल अन्क लिखकर बच्चों को देने है।

शिक्षक केलिए तैयारी

हम आदेशात्मक नही होने चाहते जिसकी वजह से शिक्षक को अपने विचारों और तरीको से सिखाने का अवसर न मिले। यह बाइबल टाइम सिखाने केलिए सिर्फ एक सूझाव है।

- **कहानी से सुपरिचित होना** - शिक्षकों को बाइबल कहानियों और उससे जुडे बाइबल टाइम पाठ से अच्छी तरह से सुपरिचित होना चाहिए। शिक्षक को पहले पाठ पूरा करना चाहिए। हर एक पाठ की दिशा-निर्देशों को ध्यान से पढकर नियोजन सहायता के रूप में भी इस्ततमाल करना चाहिए।

- **विषय को समझना** -हर एक पाठ के आरम्भ में अपने यह वाक्य देखा होगा - "हम सीख रहे हे कि" उसके बाद सीखने के दो उदेश्य भी दिए गए है जो हमे उम्मीद है कि शिक्षक के प्रस्तुति और बच्चे बाइलब टाइम को पूरा करने पर उन्हे समझ आऐंगे। सीखने का पहला उदेश्य है विषय के बारे में ज्ञान प्राप्त करना और दूसरा उदेश्य है बच्चे को इस ज्ञान के बारे में सोचने, प्रयोग करके अनुक्रिया देने केलिए प्रोत्साहन देना। यह निर्देशन पाठ में दिए गए मुख्य विषय सत्य का सूक्षम वक्तत्य है। इसे शिक्षक अपने पढाने और सीखने के अपने व्यक्तिगत मूल्यान्कन केलिए उपयोग कर सकते है।

- **परिचय कराना** - हर पाठ के आरम्भ में उन परिस्थितियों में बच्चों के अपने अनुभव के बारे में पूछकर शुरु करना चाहिए। बच्चों को पाठ का परिचय कराने केलिए कई तरीको का सुझाव दिए गए है। जिसके सहायता से कहानी की प्रारम्भ के बारे में बच्चे सम्वातात्मक चर्च कर सकेंगे।

- **पढाना**- कहानी की मुख्य सारांश हमने दिए है। हम यह नही चाहते की पढाते वक्त शिक्षक इसे देखे। हम चाहते है की शिक्षक इस पाठ से इतना परिचित हो ताकि मनेरन्जक और प्रेरणापद तरीके से बच्चों को वह सीखा पाऐंगे। शिक्षक यह चाहेंगे की बच्चे कहानी की मुख्य पाठ को समझे और उस कहानी को सीखने के बाद अनुक्रिया दे। कई प्रधान व्यख्यों को हम तिरछे अक्षरों में लिखे है।

- **सीखना** -हर एक कहानी में एक मुख्य पद दिए गए है। कई जगह दो पद दिए है। हम चाहते है की बच्चों को अक्सर मुख्य पद याद दिलाते रहे ताकि उन्हे बाइबल पदों के बारे में ज्ञान प्राप्त हो।

- **पूरा करे** - एक विध्यालय कि माहोल में बच्चो की सामर्थ्य और शिक्षक की तरह से दिए जाने वाले मदद के बारे में हमे पता होता है। कई बच्चों केलिए ज़रूरी है की शिक्षक उन्हे पाठ पढ के सुन्ाए। अन्य बच्चों स्वयं पढ सकते है। दोनों हाल में यह अच्छा होगा अगर बच्चों का ध्यान हम सवालों से सम्भन्धित निर्देशों के और खीच सके। अगर आप स्कूल से बाहर बाइबल टाइम सीखा रहे हो तो यह बहुत ज़रूरी है कि आप मदद केलिए मौजूद हो ताकि बच्चों को यह न लगे की यह एक बहुत ही मुश्किल काम या परीक्षा है। पढाते वक्त उसे मज़ेदार बनाना प्रोत्साहित करना और तारीफ करना अनिवार्य है।

- **याद करना**- पाठ को दोहराते वक्त पहेली या अभिनय द्वारा उसे मनोरंज़क बनाए ताकि बच्चों को वह हमेशा याद रहे।
- **प्रदर्शित करना**-हो सके तो चाक्षुष सहायक सामग्री का उपयोग करे ताकि बच्चों पाठ को अच्छी तरह से समझ सके। बेबसाइट में (www.freebibleimages.org & info@eikonbibleart.com) से यह सामग्री मिल सकते है।

1. मुख्य पद को सिखाना

पद को कागज़ या बोर्ड में लिखे और जैसे बच्चे उसे दोहरराते है पद से एक-एक पद करके निकाले ताकि अन्त में पूरा पद को निकाल दिया जाए और बच्चे उन्हे बिना देखे दोहराए।

2. मुख्य पद को परिचय कराने केलिए

A. बच्चों को दो झुण्ड में डालेः एक झुण्ड को कई अक्षर लिखे हुए परचियाँ दे और दुसरे झुण्ड को खाली परचे। बच्चे आपस में मिलकर उसे पूरा करे और सीखे।

B. सबसे पहले जो बच्चा बाइबल में यह पद ढूँढे वह जोर से उसे पढे।

समय योजना

क्रमः हर पाठ केलिए हम एक ही क्रम दिए है। लेकिन शिक्षक चाहे तो इच्छा अनुसार बदल सकते है।

1. प्रस्तुतीकरण और कहानी को सुनाना - लगभग 15 मिनट
2. मुख्य पद को पढाना - 5-10 मिनट
3. कार्य-पत्र को पूरा करना - 20 मिनट
4. सवाल-जवाब और दूसरे क्रियाकलाप - 5-10 मिनट

हमेशा यह कहावत याद रकनाः

"मुझे सुनाईए, मैं भूल सकता हूँ,
'मुझे दिखाईए, मैं याद रखूँगा,
मुझे शामिल करे, मैं सीख लूँगा।"

बाइबल टाइम पाठ्यक्रम

	लेवल 0 (प्री स्कूल) लेवल 1 (उम्र 5-7) लेवल 2 (उम्र 8-10)	लेवल 3 (उम्र 11-13)	लेवल 4 (उम्र 14+)
स्टार्टर सीरीज़	1. पहला पाठ - परिचय 2. U 1 लूका का सुसमाचार 3. U 2 लूका का सुसमाचार 4. U 3 लूका का सुसमाचार	1. पहला पाठ - परिचय 2. U 1 लूका का सुसमाचार 3. U 2 लूका का सुसमाचार 4. U 3 लूका का सुसमाचार	1. पहला पाठ - परिचय 2. U 1 लूका का सुसमाचार 3. U 2 लूका का सुसमाचार 4. U 3 लूका का सुसमाचार
सीरीज़ A	1. सृष्टी 2. नूह 3. पतरस 4. पतरस- क्रूस 5. अब्राहम 6. अब्राहम 7. पतरस 8. पतरस 9. याकूब 10. प्रथम ईसाई 11. पौलूस 12. क्रिसमस की कहानी	1. सृष्टी 2. नूह 3. पतरस 4. पतरस- क्रूस 5. पतरस 6. अब्राहम 7. याकूब 8. प्रार्थना 9. पौलूस 10. पौलूस 11. पौलूस 12. क्रिसमस की कहानी	1. सृष्टी और पाप 2. उत्पत्ति 3. पतरस 4. पतरस- क्रूस 5. पतरस 6. अब्राहम 7. याकूब 8. मसीही जीवन 9. पौलूस 10. पौलूस 11. पौलूस 12. क्रिसमस की कहानी
सीरीज़ B	1. मसीह का प्रारम्भीक जीवनकाल 2. अलौकिक कर्म 3. बैतनिय्याह 4. क्रूस 5. दृष्टान्त 6. यूसुफ 7. यूसुफ 8. यीशु ने मिले लोग 9. मूसा 10. मूसा 11. मूसा 12. क्रिसमस की कहानी	1. दृष्टान्त 2. अलौकिक कर्म 3. बैतनिय्याह 4. क्रूस 5. प्रथम ईसाई 6. यूसुफ 7. यूसुफ 8. सुसमाचार के लेखक 9. मूसा 10. मूसा 11. मूसा 12. क्रिसमस की कहानी	1. दृष्टान्त 2. अलौकिक कर्म 3. बैतनिय्याह 4. क्रूस 5. प्रथम ईसाई 6. याकूब और परिवार 7. यूसुफ 8 प्रेरितों 2:42 आगे की और 9. मूसा 10. मूसा 11. व्यवस्था 12. क्रिसमस की कहानी
सीरीज़ C	1. दानियेल 2. और अलोकिक कर्म 3. यीशु ने मिले लोग 4. मसीह की मौत 5. रूत और शमुएल 6. दाऊद 7. दाऊद 8. यहोशू 9. एलिय्याह 10. एलिय्याह 11. योना 12. क्रिसमस की कहानी	1. दानियेल 2. यीशु ने मिले लोग 3. और अलोकिक कर्म 4. मसीह की मौत 5. रूत 6. शमूएल 7. दाऊद 8. यहोशू 9. एलिय्याह 10. एलिय्याह 11. परमेश्वर द्वारा उपयुक्त लोग (पुराना नियम) 12. क्रिसमस की कहानी	1. दानियेल 2. यीशु की कहावत 3. प्रभु की शक्ति 4. मसीह की मौत 5. रूत 6. शमूएल 7. दाऊद 8. यहोशू 9. एलिय्याह 10. एलिय्याह 11. पुराने नियम के और किरदार 12. क्रिसमस की कहानी

	A7 – लेवल 3 कहानी 1 - याक़ूब का जीवनकाल विषय: धोखेबाज।	A7 – लेवल 4 कहानी 1 - याक़ूब का जीवनकाल विषय: धोखेबाज।
	बाइबल फोकस: ***उत्पत्ति 25: 21-34 ; 27: 1-29*** ***मुख्य पद :*** ***भजन संहिता 32: 1*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. जब हम पाप करते हैं परमेश्वर हमें क्षमा कर सकता है। 2. परमेश्वर हम में से हर एक को आशीर्वाद देना चाहता है।	***बाइबल फोकस: उत्पत्ति 25: 19-34 ; 27: 1-41*** ***मुख्य पद : रोमियों 5: 8*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. धोखाधड़ी और झूठ बोलना मुसीबत और दुःख लाता हैं। 2. परमेश्वर को हर किसी के जीवन के लिए एक योजना है, यहां तक कि याक़ूब जैसे लोगों के लिए भी।
पहचान कराने	प्रलोभन का मतलब क्या हैं, किन परिस्थिति में हम ज़्यादा झूठ बोलते है और हमें ईर्ष्या क्यों और कब होता है, इन विषयों पर चर्चा करें। इनमें से कुछ स्थितियों की एक सूची बनाएं और चर्चा करें।	हमें अपने कार्यों के परिणामों के साथ जीना होगा। अपने खुद के जीवन से इसे संबंधित करें, उदाहरण: धोखाधड़ी या झूठ बोलने के कारण आप या जान-पहचान के कोई जब परेशानी में फसे थे। विचार करें कि क्यों कानून तोड़ना (पाप) को दंडित किया जाना चाहिए।
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. इसहाक की प्रार्थना के बाद रिबका ने जुड़वाओं को जन्म दिया। एसाव सबसे बड़ा और याक़ूब छोटा था। 2. घर में पक्षपात था। इसहाक को शिकारी एसाव पसंद था और रिबका को याक़ूब पसंद था जो घर पर रहना पसंद करता था। 3. प्राचीन मध्य पूर्व में पहिलौठे के अधिकार के महत्व की व्याख्या करें। 4. एसाव शिकार करके भूखा था और याक़ूब कुछ दाल पका रहा था। लेकिन याक़ूब अपने भाई को कुछ तभी देगा अगर वह उसे अपने पहिलौठे के अधिकार देंगे। 5. जब इसहाक बूढ़ा हो गया वह अपने सबसे बेटे को आशीर्वाद देना चाहा। लेकिन रिबका और याक़ूब ने इसहाक जो लगभग अंधा था उन्हें धोखा देने का षडयंत्र बनाया। जबकि एसाव अपने पिता को भोजन देने के लिए शिकार कर रहा था रिबका और याक़ूब ने तेज़ी से भोजन बनाया, याक़ूब ने भेस बदलकर इसहाक से कहा की वह एसाव था और उसे अपने पिता से आशिर्वाद मिला। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 1 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. इसहाक की प्रार्थना के बाद रिबका ने जुड़वाओं को जन्म दिया। एसाव सबसे बड़ा और याक़ूब छोटा था। 2. घर में पक्षपात था। इसहाक को शिकारी एसाव पसंद था और रिबका को याक़ूब पसंद था जो घर पर रहना पसंद करता था। 3. प्राचीन मध्य पूर्व में पहिलौठे के अधिकार के महत्व की व्याख्या करें। 4. एसाव शिकार करके भूखा था और याक़ूब कुछ दाल पका रहा था। लेकिन याक़ूब अपने भाई को कुछ तभी देगा अगर वह उसे अपने पहिलौठे के अधिकार देंगे। 5. जब इसहाक बूढ़ा हो गया वह अपने सबसे बेटे को आशीर्वाद देना चाहा। लेकिन रिबका और याक़ूब ने इसहाक जो लगभग अंधा था उन्हें धोखा देने का षडयंत्र बनाया। जबकि एसाव अपने पिता को भोजन देने के लिए शिकार कर रहा था रिबका और याक़ूब ने तेज़ी से भोजन बनाया, याक़ूब ने भेस बदलकर इसहाक से कहा की वह एसाव था और उसे अपने पिता से आशिर्वाद मिला। 6. धोखे के उदाहरण पर चर्चा करें और ईमानदारी के महत्व की व्याख्या करें। 7. जब एसाव लौट आए तो वह बहुत गुस्सा में था और अपने पिता से उसे आशीर्वाद देने के लिए याचिका की। मगर बहुत देर हो चुकी थी। उसने अपने पहिलौठे अधिकार और उसके आशीर्वाद खो दिया था। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 1 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** इस अध्याय में याक़ूब द्वारा किए गए पापों के बारे में सोचें। हमें किस तरह के पापों के लिए माफ किया जाना चाहिए? सामूहिक रूप से और फिर निजी तौर पर सोचें। इसके बारे में छात्र के उत्तरों को इकट्ठा करके एक 'भित्तिचित्र बोर्ड' बनाएं। विचार करें कि हम परमेश्वर से और एक दूसरे से कैसे क्षमा मांग सकते हैं। आपकी मदद के लिए **भजन संहिता 32: 1 - 5** पढ़ें।	**छात्रों के लिए प्रश्न:** इस बात पर विचार करें कि एसाव को जब उसके भाई और उसकी मां के छल और झूठ का एहसास हुआ, तो उसे कैसे महसूस किया होगा। उस समय के बारे में सोचें जब आपके झूठ या धोखे से आप मुसीबत में पड़ गए थे। और उन दो तरीके लिखों जिससे आप भविष्य में अलग तरीके से रहने की कोशिश करेंगे।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** आपके द्वारा किए गए पापों को एक कागज में लिखो फिर फाड़कर उसे कूड़ेदान में डालिए। या एक बोर्ड में कुछ पापों को लिखकर फिर उसे पोंछ कर साफ़ करिएं।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. याक़ूब के जीवन में परमेश्वर की योजना था और **यिर्मयाह 29:11** में बाइबल के सिद्धांतों पर आधारित आपके जीवन में परमेश्वर की जो योजना हो सकता है उस पर विचार करें। 2. अपने भविष्य के बारे में आपको दिखाने के लिए ईश्वर को आमंत्रित करें। सकारात्मक रहें

	A7 – लेवल 3 कहानी 2 - याक़ूब का जीवनकाल विषय: स्वप्नद्रष्टा।	A7 – लेवल 4 कहानी 2 - याक़ूब का जीवनकाल विषय: स्वप्नद्रष्टा।
	बाइबल फोकस: उत्पत्ति 27: 41-46 ; 28: 10-22 *मुख्य पद : उत्पत्ति 28: 16* **हम सीख रहे हैं कि:** 1. हालांकि याक़ूब ने गलती किया था, परमेश्वर अभी भी उसके साथ थे और उससे बहुत प्यार करता था। 2. यही हमारे लिए भी कहा जा सकता है।	*बाइबल फोकस: उत्पत्ति 27: 41 - 46; 28: 1 - 22* *मुख्य पद : उत्पत्ति 28: 16* **हम सीख रहे हैं कि:** 1. याकूब ने गड़बड़ी की थी लेकिन परमेश्वर के साथ उनके कुछ अद्भुत मुठभेड़ हुए जब परमेश्वर ने उन्हें अनेक वादे दिए। 2. परमेश्वर हमेशा हमारे साथ उसी तरह से व्यवहार करता है जैसे वह याक़ूब के साथ किया।
पहचान कराने	विचार करें कि परमेश्वर हमारे जीवन को कैसे नियंत्रित करता है। उन तरीकों के बारे में सोचें जिससे हम एक दूसरे के साथ संवाद कर सकते हैं और विचार करें कि परमेश्वर कभी-कभी विभिन्न तरीकों से हमारे साथ बात करते हैं।	ऐसी एक समय का अनुभव साझा करने के लिए छात्रों से पूछिएं जब परमेश्वर पर विश्वास करने से उन्हें एक नाटकीय अलौकिक अनुभव /आश्चर्य मिला था। क्या हमें ऐसी चीजों का अनुभव करने के लिए परिपूर्ण होना चाहिए?
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. अपने पिता की मौत के बाद एसाव याक़ूब को मारने के बारे में सोचता है। रिबका सुझाव देता है कि जब तक एसाव का गुस्सा न उतरे याक़ूब अपने चाचा लाबान के साथ रहने चले जाएं। 2. इसहाक याक़ूब को आशीर्वाद देता है और वह पद्दनराम जाने के लिए निकलता है। 3. याक़ूब एक जगह रात बिताने के लिए रुका और वही पर सो गया और उसने एक स्वप्ना देखा। उसने पृथ्वी से स्वर्ग तक पहुंचता एक सीढ़ी देखा। फिर प्रभु ने , उस देश के बारे में बात की जो उसने उसे और उसके परिवार को देने का वादा किया था। और यह भी कि वह अपनी यात्रा पर उसके साथ होगा। 4. याक़ूब जाग जाता है और उस जगह का नाम बेतेल रखा, जिसका अर्थ है 'परमेश्वर का निवास' 5. याक़ूब ने परमेश्वर से मन्नत मानी, अगर परमेश्वर उसकी देखभाल करेगा तो याक़ूब प्रभु को अपना परमेश्वर मानेंगे। 6. बेतेल में याक़ूब के समय के बारें से हम क्या सबक सीख सकते हैं। 7. याक़ूब के लिए परमेश्वर के प्यार के बारें में चर्चा करके व्याख्या करें लेकिन उसके पाप के बारें में न बताएं। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 2 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. अपने पिता की मौत के बाद एसाव याक़ूब को मारने के बारे में सोचता है। रिबका सुझाव देता है कि जब तक एसाव का गुस्सा न उतरे याक़ूब अपने चाचा लाबान के साथ रहने चले जाएं। 2. इसहाक याक़ूब को आशीर्वाद देता है और वह पद्दनराम जाने के लिए निकलता है। 3. याक़ूब एक जगह रात बिताने के लिए रुका और वही पर सो गया और उसने एक स्वप्ना देखा। उसने पृथ्वी से स्वर्ग तक पहुंचता एक सीढ़ी देखा। फिर प्रभु ने , उस देश के बारे में बात की जो उसने उसे और उसके परिवार को देने का वादा किया था। और यह भी कि वह अपनी यात्रा पर उसके साथ होगा। 4. याक़ूब जाग जाता है और उस जगह का नाम बेतेल रखा, जिसका अर्थ है 'परमेश्वर का निवास' 5. याक़ूब ने परमेश्वर से मन्नत मानी, अगर परमेश्वर उसकी देखभाल करेगा तो याक़ूब प्रभु को अपना परमेश्वर मानेंगे। 6. याक़ूब के लिए परमेश्वर के प्यार के बारें में चर्चा करके व्याख्या करें लेकिन उसके पाप के बारें में न बताएं। 7. चर्चा और व्याख्या करें कि जब परमेश्वर हमारे जीवन में क्रिया करते हैं तो कैसे आश्चर्यजनक चीज़े होती है। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 2 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** 'परमेश्वर यहाँ मेरे साथ थें' शीर्षक का प्रयोग करके उन जगहों के बारें में चर्चा करें जहां आप थे जब आप महसूस किया कि परमेश्वर आपके साथ हैं। रोजमर्रा की जिंदगी में इब्रनियों 13:5 के महत्व के बारे में सोचें।	**छात्रों के लिए प्रश्न:** क्या परमेश्वर ने आप को कभी सपने दिए हैं ? क्या अपने कभी भी एक एक सपना देखा जिसका कोई आध्यात्मिक अर्थ था? उस सपने का अर्थ क्या था और यह किस तरह से आपको जीवन में मदद किया? विचार करें कि परमेश्वर आज लोगों से कैसे बात कर सकता है? परमेश्वर कौन से वादे करता है जो अपने रोजमर्रा के जीवन में छात्रों के लिए प्रासंगिक है?
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. क्या आपके पास एक ऐसे समय का अनुभव है जब आपने पाप किया था, फिर भी आप जानते थे कि परमेश्वर ने आपको इंकार करने के बजाय आपको आशीष दी थी? 2. इस प्रकार का अनुभव से आपको कैसा महसूस होता है? 3. परमेश्वर आप से कैसे बात करेंगे?	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. आध्यात्मिक सपने की बारें में खोज करें और इस तरह से परमेश्वर आप से बात करने लिए आपका मन खुला रखें। 2. बाइबल में दिए गए परमेश्वर के चार वादों को ढूंढिऐं। इन का उपयोग करके प्रार्थना करें।

	A7 – लेवल 3 कहानी 3 - याक़ूब का जीवनकाल विषय: निराशा।	A7 – लेवल 4 कहानी 3 - याक़ूब का जीवनकाल विषय: निराशाएं।
	बाइबल फोकस: उत्पत्ति 29: 1-30 ***मुख्य पद : गलतियाँ 6: 7*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. जिंदगी बुवाई और कटाई की तरह है। 2. कोई वादा नहीं है कि जीवन हमेशा आसान होगा।	***बाइबल फोकस: उत्पत्ति 29: 1 - 30 ; 31: 1 - 21*** ***मुख्य पद : गलतियाँ 6: 7*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. जिंदगी बुवाई और कटाई की तरह है। 2. परमेश्वर जो कहता है सच कहता है। 3. हमें उसी तरह दूसरों के साथ व्यवहार करना चाहिए जैसे हम चाहते हैं कि वे हमारे साथ व्यवहार करें।
पहचान कराने	बागानों, खेतों आदि में बुवाई और कटाई के बारे में बात करें। और बताएं कि जो भी बीज बोया जाता है, वह उसी फसल का उत्पादन करेगा। इस बारे में बात करें कि हमें हमारे व्यवहार के परिणामों को भुगतना पड़ता है चाहे वह अच्छा या बुरा हो। जैसा बोओगे, तो काटोगे। आज कल के कुछ लोगों के बारे में सोचो जिनके बुरी व्यवहार के कारण उन्हें बुरा परिणामों को भुगतना पड़ा।	बागानों, खेतों आदि में बुवाई और कटाई के बारे में बात करें। और बताएं कि जो भी बीज बोया जाता है, वह उसी फसल का उत्पादन करेगा। इस बारे में बात करें कि हमें हमारे व्यवहार के परिणामों को भुगतना पड़ता है चाहे वह अच्छा या बुरा हो। जैसा बोओगे, तो काटोगे। आज कल के कुछ लोगों के बारे में सोचो जिनके बुरी व्यवहार के कारण उन्हें बुरा परिणामों को भुगतना पड़ा।
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. याक़ूब अराम पहुंचता है और चरवाहों को मिलता है जो अपनी भेड़ के लिए पानी पिला रहे थे। 2. उसका चचेरी बहन राहेल भेड़ों को पानी पिलाने आती हैं और याक़ूब उसकी मदद करता है। और जब वह अपने पिता को याक़ूब के बारें में बताती है तो वह उसे अपने घर में स्वागत करता है। 3. याक़ूब लाबान के लिए काम करता है और उनसे वादा किया जाता है कि अगर वह सात साल लाबान के लिए काम करें तो वह राहेल जिसे वह प्यार करता है उससे शादी कर सकता है। 4. शादी के बाद याक़ूब को पता चले कि उन्हें धोखा दिया गया हैं और उसका शादी राहेल कि जगह उसकी बहन लिआ से की गई थी। 5. बाद में उन्हें राहेल को भी अपनी पत्नी के रूप में मिला लेकिन उसके लिए उन्हें सात और साल काम करना पड़ा। 6. चर्चा करें कि कैसे चालबाज याक़ूब वर्षों पहले अपने घर में किए धोखे की परिणामों का सामना कर रहा था। 7. उन तरीकों के बारें में चर्चा करें जिसमें लोग निराशा से निपटते हैं। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 3 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. याक़ूब अराम पहुंचता है और चरवाहों को मिलता है जो अपनी भेड़ के लिए पानी पिला रहे थे। 2. उसका चचेरी बहन राहेल भेड़ों को पानी पिलाने आती हैं और याक़ूब उसकी मदद करता है। और जब वह अपने पिता को याक़ूब के बारें में बताती है तो वह उसे अपने घर में स्वागत करता है। 3. याक़ूब लाबान के लिए काम करता है और उनसे वादा किया जाता है कि अगर वह सात साल लाबान के लिए काम करें तो वह राहेल जिसे वह प्यार करता है उससे शादी कर सकता है। 4. शादी के बाद याक़ूब को पता चले कि उन्हें धोखा दिया गया हैं और उसका शादी राहेल कि जगह उसकी बहन लिआ से की गई थी। 5. बाद में उन्हें राहेल को भी अपनी पत्नी के रूप में मिला लेकिन उसके लिए उन्हें सात और साल काम करना पड़ा। 6. चर्चा करें कि कैसे चालबाज याक़ूब वर्षों पहले अपने घर में किए धोखे की परिणामों का सामना कर रहा था। 7. बाद में परमेश्वर याक़ूब को अपने घर वापस जाने के लिए कहता है। परमेश्वर के आशीर्वाद से उसके पास एक बड़ा परिवार और भेड़ - बकरियों का बड़े झुंड था। याक़ूब लाबान को नहीं बताता कि वह जा रहा है और जब लाबान घर से दूर था वह फरार होता हैं। 8. याक़ूब की गलतियों के बारे में सोचो और चर्चा करें कि कैसे परमेश्वर अभी भी उन लोगों के जीवन में क्रिया करते हैं जो परिपूर्ण नहीं हैं। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 3 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** एक चार्ट बनाओ और बच्चों से उस पर एक-एक करके उन तरीकों को लिखने के लिए कहे जिससे वह निराशा से निपट सकते हैं।	**छात्रों के लिए प्रश्न:** लोगों के जीवन में बुवाई और कटाई के उदाहरणों के बारे में सोचो, पहले एक नकारात्मक तरीके से फिर एक सकारात्मक तरीके से।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. आखिरी बार आप निराश कब हुए थे? 2. आप ने इसका सामना कैसे किया? 3. क्या इससे बेहतर तरीके से आप इसे निपटा सकते थे? 4. दो कॉलम बनाएँ और बुवाई और कटाई के तीन उदाहरणों की सूची इनमे लिखिऐ।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. क्या आप एक धोखेबाज के बारे में जानते हैं जिसे बाद में धोखा दिया गया था? 2. क्या आप अन्य उदाहरणों के बारे में सोच सकते हैं जब लोगों के गलत व्यवहार उन्हें अशांत करने वापस आए हो?

	A7 – लेवल 3 कहानी 4 - याक़ूब का जीवनकाल विषय: खोज।	A7 – लेवल 4 कहानी 4 - याक़ूब का जीवनकाल विषय: खोज।
	बाइबल फोकस: उत्पत्ति 32: 1-21 ; 33: 1-11 ***मुख्य पद : 1 यूहन्ना 1:9*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. जैसा कि याकूब के जीवन में हुआ उसी तरह परमेश्वर की मदद से लोगों को उनकी बुरे कामों के लिए क्षमा करना संभव है। 2. जब भी हम पश्चाताप करके परमेश्वर से प्रार्थना करते है तो वह हमेशा हमें क्षमा करेंगे।	***बाइबल फोकस: उत्पत्ति 32: 1-32 :33: 1-17*** ***मुख्य पद : 1 यूहन्ना 1: 9*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. याक़ूब अपने जीवन में एक संकट में है। लेकिन उनके लिए परमेश्वर से मिलना अपने लम्बे समय से बिछड़े भाई को मिलने से भी अधिक महत्वपूर्ण था । 2. हालांकि याक़ूब अब एक वयस्क व्यक्ति था लेकिन परमेश्वर को अभी भी उनके जीवन के लिए नई योजनाएं थीं।
पहचान कराने	विद्यार्थियों को याद दिलाएं कि याक़ूब परमेश्वर का आज्ञापालन करके अपने घर लौट रहे हैं। लेकिन वह एसाव से मिलने के बारे में चिंतित हैं जो सालों पहले उसे मारने की धमकी दी थी। विचार करें यदि एसाव उसे क्षमा करने के लिए तैयार हो सकता है। उन चीजों की सूची बनाएं जो आमतौर पर होती हैं: (a) जब आप माफ नहीं करते और (b) माफ करते हैं।	इसके बारे में चर्चा करें कि एक विशिष्ट व्यक्ति को मिलने में क्या कुछ शामिल है। और हम इसके लिए कैसे तयारी करेंगे। परमेश्वर के साथ अनेक सालों से संपर्क न होने के बाद याकूब अब उनसे मिलता है। याकूब में बड़ा बदलाव आया और उसे एसाव से मिलने के लिए मदद मिली।
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. उन कारणों पर विचार करें जिसके वजह से कई सालों के बाद भी याक़ूब अपने घर लौटने के लिए डर रहा था। 2. याकूब और अधिक भयभीत हो जाता है जब उसे खबर मिलता है कि एसाव 400 पुरुषों के साथ उसे मिलने के लिए आ रहा है। 3. याक़ूब तीन चीजें करता है: (ठ) वह अपने परिवार को दो दल में विभाजित किया इस उम्मीद पर कि कम से कम एक समूह सुरक्षित रहेगा (32: 7,8) (ड) वह प्रार्थना करता है (32: 9-12) (ड़) वह एसाव को उपहार भेजता है (32: 13-16) 4. उस रात याक़ूब को एक बहुत अद्भूत अनुभव हुआ। परमेश्वर को मिलना और उसके आशीर्वाद के लिए विनती करना। (32: 22-31) 5. याक़ूब का डर अकारण था। एसाव उसे गले लगाता है और लगता है की वह उसे माफ कर दिया है। याक़ूब ने अपने परिवार को परिचय कराया और अपने उपहारों को स्वीकार करने के लिए एसाव को राजी की। 6. फिर भी वह अपने पिता के पास नहीं गया और तुरन्त वापस न लौटकर उसने एक बार फिर एसाव को धोखा दिया। 7. इस बात पर विचार करें कि याक़ूब ने क्यों संदेह किया और उसने परमेश्वर के वादों को स्वीकार क्यों नहीं किया। 8. अपने भय को बांटे और व्याख्या करें कि ज्यादातर भय वास्तव में कभी नहीं होता, भले ही हम उन पर ध्यान केंद्रित करने में काफी समय बिताते हैं। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 4 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. उन कारणों पर विचार करें जिसके वजह से कई सालों के बाद भी याक़ूब अपने घर लौटने के लिए डर रहा था। 2. याकूब और अधिक भयभीत हो जाता है जब उसे खबर मिलता है कि एसाव 400 पुरुषों के साथ उसे मिलने के लिए आ रहा है। 3. याक़ूब तीन चीजें करता है: ठ) वह अपने परिवार को दो दल में विभाजित किया इस उम्मीद पर कि कम से कम एक समूह सुरक्षित रहेगा (32: 7,8) ड) वह प्रार्थना करता है (32: 9-12) ड़) वह एसाव को उपहार भेजता है (32: 13-16) 4. उस रात याक़ूब को एक बहुत अद्भूत अनुभव हुआ। परमेश्वर को मिलना और उसके आशीर्वाद के लिए विनती करना। (32: 22-31) 5. याक़ूब का डर अकारण था। एसाव उसे गले लगाता है और लगता है की वह उसे माफ कर दिया है। याक़ूब ने अपने परिवार को परिचय कराया और अपने उपहारों को स्वीकार करने के लिए एसाव को राजी की। 6. फिर भी वह अपने पिता के पास नहीं गया और तुरन्त वापस न लौटकर उसने एक बार फिर एसाव को धोखा दिया। 7. इस बात पर विचार करें कि याक़ूब ने क्यों संदेह किया और उसने परमेश्वर के वादों को स्वीकार क्यों नहीं किया। 8. उन लोगों की वास्तविक जीवन कहानियों पर विचार करें जो दूसरों को क्षमा किया है। 8. माफ़ नहीं करने से हम अपने आप और दूसरों के लिए जो नुकसान पहुंचाते हैं, इसके बारे में सोचिएं। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 4 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** ऊपर दिए अनुभाग का जिक्र करते हुए अपने कुछ विचारों का उपयोग करें और परमेश्वर को एक पत्र लिखें। छात्रों को विचार करने के लिए कहे कि वे परमेश्वर से सामने क्या कबुलेंगे, वे परमेश्वर से क्या मांगेंगे, और किन चीज़ों के लिए उन्हें धन्यवाद देंगें।	**छात्रों के लिए प्रश्न:** विचार करें कि परमेश्वर से मिलने का मतलब क्या है: a) यह कब किया जा सकता है? b) यह कैसे किया जा सकता है? c) ऐसा क्यों किया जा सकता है? छात्रों से पूछें कि क्या कभी भी परमेश्वर के साथ उनके व्यक्तिगत मिलन हुई थी।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. इस बाइबल पद से क्या सीखा जा सकता है जो हमारे जीवन से संबंधित है? 2. किसी को हाल ही में माफ किए जाने के उदाहरण दें। 3. क्या हम किसी से क्षमा मांगने के लिए परमेश्वर की मदद के लिए पूछ सकते हैं?	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. छात्रों से पूछें कि क्या उनके पास कोई है जो हाल ही में उन्हें माफ़ नहीं किया हैं या उन्हें माफ कर दिया है। 2. इससे उन्हें कैसे महसूस हुआ? 3. क्या कोई हैं जिसे हम माफ़ करना चाहिए?

	A8 – लेवल 3 कहानी 1 - मसीही बनना विषय: प्रार्थना का मतलब क्या है?	A8 – लेवल 4 कहानी 1 - मसीही बनना विषय: प्रार्थना के बारे में सीखन
	बाइबल फोकस: भजन संहिता 5: 1-8 ***मुख्य पद : भजन संहिता 5: 2*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. प्रार्थना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि परमेश्वर बहुत महत्वपूर्ण हैं। 2. परमेश्वर से बातें करना और सुनना प्रार्थना है। 3. कभी-कभी हमारी प्रार्थनाओं का जवाब हमें नहीं मिलते और इसके कई कारण हैं।	***बाइबल फोकस: लूका 11: 1-10 ; मत्ती 6: 5-15*** ***मुख्य पद : लूका 11: 9*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. हमें यह समझना चाहिए कि प्रार्थना एक महान सौभाग्य है। 2. हमें अक्सर प्रार्थना करनी चाहिए। 3. हमारे निजी प्रार्थना में हम खुद पर ज़्यादा ध्यान नहीं देना चाहिए।
पहचान कराने	दूर रह रहे दोस्तों और परिवार के साथ संपर्क में रहने की कोशिश की समस्याओं के बारे में सोचो। उस अद्भुत तथ्य पर विचार करें कि हम परमेश्वर के साथ संवाद कर सकते हैं। बच्चों से पूछों अगर वह प्रार्थना करते है? क्यों? और क्यों नहीं?	दूर रह रहे दोस्तों और परिवार के साथ संपर्क में रहने की कोशिश की समस्याओं के बारे में सोचो। उस अद्भुत तथ्य पर विचार करें कि हम परमेश्वर के साथ संवाद कर सकते हैं। सोचें कि किस तरह की चीजों के बारे में हमें प्रार्थना करनी चाहिए। क्या बच्चों को अपने प्रार्थनाओं के उत्तर मिले हैं। उत्तर मिलें प्रार्थनाओं के लिए उनकी प्रतिक्रिया क्या थी?
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. विचार करें कि हम जब प्रार्थना करते हैं तो हम किसके साथ बात कर रहे है। और कुछ खिताबों के बारें में सोचो जो दाऊद भजन में लिखा हैं। 2. सोचो की दिन में कब और कितने बार दाऊद प्रार्थना करता था और चर्चा करें कि किस समय पर हम प्रार्थना कर सकते हैं। 3. भजन में से चर्चा करें कि हमारी प्रार्थनाओं को सुनने से परमेश्वर को रोकता क्या है? 4. भजन में से हम क्या सबक सीख सकते हैं जो परमेश्वर से प्रार्थना करने के लिए हमें तैयार करने में मदद करेगा 5. दाऊद को प्रभु के साथ एक विशेष संबंध था, क्योंकि वह पद 2 में प्रभु को 'मेरे राजा' और 'मेरा परमेश्वर' कह कर पुकारते है। हम उस विशेष संबंध को कैसे प्राप्त कर सकते हैं? 6. चर्चा करें और समझाएं कि प्रार्थना कितना महत्वपूर्ण है। बिना प्रार्थना के हमारे जीवन में क्या होगा? 7. हम किन चीज़ो के लिए प्रार्थना कर सकते हैं? **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 1 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. एक बार यीशु प्रार्थना कर रहा था और उसके शिष्यों ने प्रार्थना करना सीखाने के लिए उनसे कहा। 2. विचार करें कि हम जब प्रार्थना करते हैं तो हम किस से बात कर रहे हैं। और उस शीर्षक के बारे में सोचे जिस कि यीशु ने इस्तेमाल किया था। 3. यीशु ने प्रतिदर्श प्रार्थना का शुरआत परमेश्वर को स्तुति करके किया। हमारी प्रार्थनाओं में स्तुति का क्या हिस्सा होना चाहिए? 4. प्रतिदर्श प्रार्थना में यीशु ने किए तीन मुख्य अनुरोधों के बारे में सोचें। 5. उस वक्त जो दृष्टान्त यीशु ने कहा उसको पढ़िए (लूका 11: 5-10) और मुख्य सबक में प्रार्थना में दृढ़ता से संबंधित जो शिक्षण यीशु ने दिया था उसके बारें में सोचिएं। 6. मत्ती 6: 5-15 में प्रार्थना के बारे में सिखाया सबक के बारे में सोचो। 7. विचार करें कि जब चीजें गलत होती हैं तब हम ज़्यादा प्रार्थना क्यों करते हैं। 8. उन कारणों के बारे में सोचो जब प्रार्थना करना हमारे लिए मुश्किल होता है। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 1 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** क्या कोई चीज़ें हैं या लोग जिन को हमारी प्रार्थना की आवश्यकता है? हमें कितनी बार प्रार्थना करनी चाहिए? और कितनी देर तक? बाइबल में से एक अन्य व्यक्ति की प्रार्थना के बारे में सोचें और हम उनकी प्रार्थना जीवन में से क्या सबक सीख सकते हैं।	**छात्रों के लिए प्रश्न:** अध्ययन 1 में वर्णित प्रार्थना के पांच पहलुओं के बारे में संक्षेप में बात करें। इन सभी पहलुओं को समा के प्रार्थना तैयार करने पर बच्चों से चर्चो करें।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** प्रार्थना करते वक्त क्या हमें अधिक समय बात करना चाहिए या सुनना चाहिए? शायद हमें प्रार्थना करते वक्त परमेश्वर की बातों को सुनना भी शुरू करनी चाहिए।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** उन स्थितियों के बारे में सोचों जहा हमारे व्यक्तिगत जीवन, परिवार, स्थानीय समुदाय, देश और दुनिया भर के लिए प्रार्थना की जा सकती है। उन प्रार्थनाओं के लिए धन्यवाद देना न भूलिए जिनका उत्तर हमें मिल गए है।

	A8 – लेवल 3 कहानी 2 - मसीही बनना विषय: क्या परमेश्वर हमारी प्रार्थना सुनता है?	A8 – लेवल 4 कहानी 2 - मसीही बनना विषय: बाइबल के बारे में सीखना।
	बाइबल फोकस: लूका 18: 9-14 *मुख्य पद : याक़ूब 4: 6* **हम सीख रहे हैं कि:** 1. परमेश्वर से प्रार्थना करने के लिए हमें कलीसिया जाने की जरूरत नहीं है। हम कहीं भी और किसी भी समय प्रार्थना कर सकते हैं 2. परमेश्वर चाहता हैं कि हमारी प्रार्थना में हम विनम्र और सच्चा रहे।	*बाइबल फोकस: प्रेरितों 17: 10-14 ; 2 तीमुथियुस 3: 14-17* *मुख्य पद : भजन संहिता 119: 105* **हम सीख रहे हैं कि:** 1. बाइबल पढ़ना महत्वपूर्ण है। 2. हम बाइबल पर विश्वास कर सकते हैं क्योंकि यह परमेश्वर का वचन है।
पहचान कराने	पाठ 1 में प्रार्थना के बारे में सीखा सबक की समीक्षा करें। बाइबल कहती है कि विनाश से पहले गर्व आता है। (नीतिवचन 16:18) इस पर विचार करें कि आप इसका क्या मतलब मानते हैं। इसे वास्तविक जीवन की या काल्पनिक घटना के द्वारा समझाएं।	किसी भी अन्य पुस्तक की तुलना में दुनिया में सबसे अधिक बाइबल हैं। वर्षों से कई देशों ने इस पर प्रतिबंधित लगाने का प्रयास की। इसे जलाया यहां तक कि दफनानाया भी है। लेकिन फिर भी इसका विनाश नहीं हुआ। यह इसलिए है क्योंकि यह परमेश्वर का वचन है।
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. यीशु सिखा रहा था कि हमें हमेशा प्रार्थना करना और हार न मानना चाहिए (पद 1) 2. वह यह भी समझा रहा था कि जो लोग गर्वी और विनम्र नहीं हैं वे प्रार्थना करने के लिए सही रवैया में नहीं होते। (पद 9) 3. देखो कितनी बार धार्मिक आदमी (फरीसी) ने 'मैं' शब्द का उपयोग किया। 4. बच्चों से चुंगी लेने वाले के प्रार्थना और रवैये का वर्णन करने के लिए कहें। 5. इन दो पुरुषों की प्रार्थना कि अलग-अलग दृष्टिकोणों के बारें में चर्चा करें। 6. यह विचार करें कि परमेश्वर ने किस को अधिक पसंद किया और क्यों? **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 2 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. मसीही के लिए बाइबल सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक है। लेकिन हम कैसे सुनिश्चित कर सकते हे कि हैं यह सत्य है? 2. बाइबल पठन हमें बताता है कि सभी पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया हैं, जिसका मतलब है कि परमेश्वर ने इसे प्रेरित किया। परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकते इसलिए हम यह मानते हैं कि बाइबल सत्य हैं। 3. पुराने नियम में कई चीजों की भविष्यवाणी की गई हैं, जो सैकड़ों वर्ष बाद वास्तव में सम्बव हुआ। उदाहरण के लिए, पुराने नियम में यीशु के जन्म से जुड़े सारे संदर्भ। 4. करीब 40 अलग-अलग लोगों ने कई शताब्दियों में बाइबल की हिस्सों को लिखा। लेकिन एक मुख्य विषय और संदेश है जो इस पुस्तक में एकता लाते हैं। 5. बाइबल का पठन और उसके शिक्षण का पालन करने से पवित्र आत्मा की मदद से लोगों के जीवन को बदल सकते हैं 6. कोई आश्चर्य नहीं कि बाइबल इतना महत्वपूर्ण है। बाइबल पढ़ने की आवश्यकता के कारणों के बारें में सोचो। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 2 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** एक कागज़ में चुंगी लेने वाले और फरीसी के स्वभाव के गुणों के बारें में लिखों।	**छात्रों के लिए प्रश्न:** मुख्य पद के बारे में सोचें और फिर एक तस्वीर बनाओ जिसमे प्रकाश की एक किरण आकाश से बाहर आ रहा है। इसके नीचे कुछ चीजें लिखें जिस के लिए आपको परमेश्वर के प्रकाश की ज़रूरत हैं। उदहारण: जब आपको कोई निर्णय लेने की ज़रूरत पड़े या आपके परेशानी में मदद कि आवश्यक्ता हैं।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. विनम्र शब्द का मतलब क्या है और हम अधिक विनम्र कैसे बन सकते हैं? उदाहरण दें कि हम नम्रता कैसे दिखा सकते हैं। 2. गर्व शब्द का क्या मतलब है? और हम कम गर्वी कैसे बन सकते है? उदाहरण दें कि हम अपना गर्व कैसे दिखा सकते हैं।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. बाइबल को पढ़ना आसान बनाने कि प्रायौगिक तरीके क्या है? 2. बाइबल को अक्सर पढ़ने, इसे बेहतर समझने और इसे हमारे जीवन में लागू करने में मदद के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करने के बारे में सोचिएं।

	A8 – लेवल 3 कहानी 3 - मसीही बनना विषय: हमें कैसे प्रार्थना करनी चाहिए?	A8 – लेवल 4 कहानी 3 - मसीही बनना पविषय: ारमेश्वर के लिए जीना।
	बाइबल फोकस: मत्ती 6: 5-15 ***मुख्य पद : मत्ती 6: 8*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. हमें अक्सर प्रार्थना करनी चाहिए, न कि जब चीजें प्रतिकूल हो जाए। 2. हमारी प्रार्थनाओं को लम्बी और विचित्र शब्दों के होने की जरूरत नहीं है। 3. 'परमेश्वर की प्रार्थना' हमारी प्रार्थनाओं को सरंचने में हमारी सहायता के लिए है।	***बाइबल फोकस: यूहन्ना 15: 1-17 : गलतियाँ 5: 22,23*** ***मुख्य पद : यूहन्ना 15: 5*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. मसीहियों को अधिकाधिक यीशु की तरह बनना चाहिए। 2. इसका रहस्य है उनके साथ रहना जैसा कि दाखलता और उसकी शाखाओं से सचित्र किया है। 3. अधिक फल देने के लिए मसीही को परमेश्वर के स्पर्श की रूप में छंटाई की आवश्यकता है।
पहचान कराने	1. सबक 1 और 2 की समीक्षा करें और उन सभी को जो प्रार्थना के बारे में सीखा है। विचार करें कि अक्सर प्रार्थना करना अनेक लोगों के लिए मुश्किल क्यों है? 2. एकाग्रत होने में मदद करने के लिए ज़ोर से प्रार्थना करने के फायदे क्या होंगे?	1. फलवन्त मसीहियों के बारे में सोचें जो आत्मा के बहुत सारे फल प्रदर्शित करते हैं। और इसके बारे में सोचें कि उनके जीवन कैसे फलवन्त होते हैं। 2. समझाएं कि परमेश्वर हमारे जीवन में बेकार और शायद पापी चीज़ों को दूर करके कैसे काम करते हैं जैसे एक माली की तरह जो दाखलता की छँटाई करता है।
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. प्रभु पर्वत पर धर्मोपदेश में प्रार्थना के बारे में सिखाया। 2. व्याख्या करें कि प्रार्थना परमेश्वर और हमारे बीच की निजी बात क्यों है। 3. समझाएं कि प्रार्थनाओं को दोहराना सही तरीका क्यों नहीं है। 4. चर्चा करें कि अगर 'पिता मांगने से पहले ही हमारी आवश्यकताएँ जानते है' तो प्रार्थना करने की जरूरत क्या है। 5. परमेश्वर की प्रतिदर्श प्रार्थना को स्तुति और प्रार्थना अनुरोधों के सबंध में सोचें। 6. प्रार्थना करते समय विश्वास करें कि परमेश्वर उत्तर देंगें । **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 3 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. व्याख्या करों कि इस चित्र में माली के रूप में पिता परमेश्वर, प्रभु के रूप में दाखलता और शाखाओं के रूप में मसीही हैं। 2. समझाओ कि परमेश्वर हमारे जीवन फलवन्त देखना चाहता है और यह सबसे अच्छे तरीके से **गलतियों 5: 22-23** में सचित्र है। 3. देखो फलद पेड़ों उसके छंटनी के पहले और बाद में कैसे लगता है। और फल की पैदावार अधिक होने के लिए यह प्रक्रिया क्यों महत्वपूर्ण है। 4. यह **गलतियों 5: 19-20** से विपरीत हैं जहां मानव स्वभाव का फल है वहाँ पवित्र आत्मा का काम या मसीह पर विश्वास नहीं होता। 5. छात्रों को याद दिलाएं कि हम मसीही के लिए परमेश्वर का उद्देश्य हैं कि हम मसीह की तरह बने जिन्होंने अपने जीवन में पवित्र आत्मा के सभी फल प्रदर्शित किए। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 3 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** **1 तीमुथियुस 2:1** के बारे में सोचें और विभिन्न प्रकार की प्रार्थनाओं पर चर्चा करें। उन जगहों के बारे में सोचें जहां हम निजी तौर पर प्रार्थना कर सकते हैं। बच्चों द्वारे दिए उत्तर को एक सूची में लिखों।	**छात्रों के लिए प्रश्न:** इस अध्ययन में सीखा महत्वपूर्ण सबक को सारांशित करें। ज़ोर देना है कि मसीही के साथ रहना सबसे मत्त्वपूर्ण हैं जैसे कि **यूहन्ना 15:4-5** में कहा गया है।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** प्रार्थना एक निष्क्रिय बात नहीं है, लेकिन एक सक्रिय बात है। प्रार्थना करते वक्त विश्वास करने के लिए परमेश्वर की मदद मांगे। परमेश्वर की प्रार्थना में दिए गए उदाहरण का उपयोग करके बच्चों को अपनी खुद की प्रार्थना तैयार करने के लिए मदद करें।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** प्रबच्चों से प्रार्थनापूर्वक **गलतियों 5: 22-23** पढ़ने के लिए कहें और परमेश्वर से ये पूछें कि वह गुण या फल कौन सा है जिसे विकसित करने के लिए परमेश्वर की मदद की आवश्यकता है।

	A8 – लेवल 3 कहानी 4 - मसीही बनना विषय: क्या परमेश्वर प्रार्थन का उत्तर देता है?	A8 – लेवल 4 कहानी 4 - मसीही बनना विषय: परमेश्वर को देना।
	बाइबल फोकस: 1 शमूएल 1: 1-20 *मुख्य पद : 1 शमूएल 1: 20* **हम सीख रहे हैं कि:** 1. हमारी प्रार्थनाएं के उत्तर हमेशा जिस तरह हम चाहते हैं या जितनी जल्दी हम चाहें हैं वैसे नहीं मिलते। 2. परमेश्वर का जवाब और योजनाएं हमेशा हमारी तुलना में श्रेष्ठ हैं।	*बाइबल फोकस: मरकुस 12: 41-44 ; मत्ती 6: 1-4* *मुख्य पद : 2 कुरिन्थियों 9: 7* **हम सीख रहे हैं कि:** 1. हमारे मसीही जीवन के एक महत्वपूर्ण पहलू हैं परमेश्वर को हर्ष से देना। 2. परमेश्वर को देना पैसे तक सीमित नहीं है।
पहचान कराने	हन्ना और उसकी परिस्थिति का परिचय दो। हन्ना की भावनाओं को दिखाने के लिए चित्रों और शब्दों का उपयोग करके एक दीवार प्रदर्शन बनाएं: प्रार्थना के बाद अ प्रार्थना के बाद	उन चीज़ें की एक सूची बनाएं जो परमेश्वर हमें देता है और जो हम परमेश्वर को दे सकते हैं।
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. हन्ना की परिस्थिति और उनके परिवार के बारें में संक्षिप्त रूप से समझाएं। और प्रभु के घर दण्डवत करने और मेलबलि चढ़ाने के लिए प्रति वर्ष किए गए यात्राओ के बारें में भी व्याख्या कीजिए। 2. व्याख्या कीजिएं कि हन्ना कैसे महसूस करती जब बच्चा न होने की कारण पनिन्ना उसे चिढाती थी। 3. हन्ना की प्रार्थना और प्रभु के प्रति उसकी वचन के बारे में सोचो। 4. हन्ना की प्रार्थना के प्रति एली पुरोहित की प्रतिक्रिया की व्याख्या करें। 5. समझाओ कि परमेश्वर ने हन्ना की प्रार्थना का जवाब कैसे दिया। 6. इसके बारे में सोचें कि उसने प्रार्थना करके अपनी सारी चिंताएं परमेश्वर पर छोड़ने के बाद कितना अलग महसूस किया होगा। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 4 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. मंदिर में स्थिति का वर्णन कीजिए जहाँ परमेश्वर भण्डार में पैसे डालते हुए लोगों को देख रहा था। 2. व्याख्या करें कि गरीब विधवा की पेशकश दूसरों से अलग क्यों थी? 3. इस विधवा की छोटी भेंट से यीशु इतना प्रसन्न क्यों था? 4. भगवान को अपना समय, प्रतिभा, धन देने के बारे में यह घटना हमें क्या सिखाती है? 5. परमेश्वर हमें गुप्त में देने के लिए निर्देशित क्यों करता है? 6. उस वचन के बारे में सोचो जो परमेश्वर ने गुप्त में देने वाले लोगों को दिए है। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 4 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** 1. छात्रों से पूछें कि क्या वे कभी दुखी महसूस किया हैं। 2. इस बात पर विचार करें कि उस समय वे अपना मदद कैसे कर सकते थे। 3. चर्चा करें कि क्या कभी किसी ने अपनी चिंताओं को परमेश्वर पर छोड़ने के बाद बहुत अच्छा महसूस किया था।	**छात्रों के लिए प्रश्न:** 1. उन तरीकों के बारें में विचार करें जिससे हम परमेश्वर को दे सकते है। 2. एक बात का चयन करें जो आज के अध्ययन के परिणामस्वरूप व्यवहार में लाया जा सकता है। 3. बच्चों से कहें कि जब वे देते है तब उसके मकसद उचित होनी चाहिएं।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सोचें जो इस बात को जानकर खुश महसूस करे कि परमेश्वर उनके चिंताओं को उठाकर उन्हें सन्तुष्ट कर सकते हैं। क्या आप उन्हें शीघ्र मिलके इस बारे में बता सकते हैं?	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** देने के बारे में संबंधित किसी भी अन्य बाइबल पदों को देखें। उदाहरण: यीशु ने कहा 'लेने से देना धन्य हैं' **(प्रेरितों 20:35)** इस सिद्धांत को समझने में मदद के लिए परमेश्वर से पूछें।

	A9 – लेवल 3 कहानी 1 - पौलुस का अभियान विषय: उत्पीड़क।	A9 – लेवल 4 कहानी 1 - प्रेरित पौलुस विषय: मन-परिवर्तन।
	बाइबल फोकस: प्रेरितों 9: 1-19 *मुख्य पद : 2 कुरिन्थियों 5: 17* **हम सीख रहे हैं कि:** 1. मसीह के साथ मुलाकात के बाद पौलुस बदल गया था। 2. परमेश्वर अभी भी ज़िंदगीयों में परिवर्तन लाता है।	*बाइबल फोकस: प्रेरितों 9: 1-30* *मुख्य पद : 2 कुरिन्थियों 5: 17* **हम सीख रहे हैं कि:** 1. केवल परमेश्वर ही ज़िन्दगीयों में परिवर्तन ला सकते हैं। 2. एक मसीही होना कठिन हो सकता है, लेकिन परमेश्वर ख़ास तौर पर मुश्किल वक्त में मसीही के साथ होते है।
पहचान कराने	शाऊल के सबन्ध के बारें में व्याख्या की जिए **(प्रेरितों: 7:58)** रूपांतरण नये नियम के मुख्य पात्रों में से एक के रूप में शाऊल को परिचय कराइए। स्तिफनुस की मौत और की अवधारणा को पेश करने के लिए एक तितली में बदलने वाले झांझा का उदाहरण का उपयोग करें।	शाऊल के सबन्ध के बारें में व्याख्या की जिए **(प्रेरितों: 7:58)** रूपांतरण नये नियम के मुख्य पात्रों में से एक के रूप में शाऊल को परिचय कराइए। स्तिफनुस की मौत और की अवधारणा को पेश करने के लिए एक तितली में बदलने वाले झांझा का उदाहरण का उपयोग करें।
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. समझाओ कि कहानी में लम्बी समय तक पौलुस को शाऊल के नाम से जाना जाता था। 2. यह बताएं कि वह दमिश्क क्यों यात्रा जा रहा था। 3. ध्यान से समझो कि क्या हुआ, और जब शाऊल परमेश्वर से मिले तब क्या कहा गया था। जो खातें पौलुस ने बाद में दिए थे वह सहायक हो सकते है। **(प्रेरितों 22: 1-13, 26: 9-18)** 4. वर्णन करें कि उन्हें दमस्कुस तक ले जाने के बाद क्या हुआ और उन्हें क्या चनौती दी गई थी। 5. रूपांतरण/परिवर्तन शब्द का अर्थ क्या है? रूपांतरण परमेश्वर की कृपा का एक काम है जो किसी को मसीह में नए बनाता हैं। इसे नए सिरे से जन्म लेने से जोड़िए। **(यूहन्ना 3: 3)** 6. वर्णन करें कि कैसे मसीह का सामना करने के बाद पौलुस में परिवर्तन आया था। 7. इस पर ज़ोर देना जरूरी है कि यह संदेश ईसाई धार्मिक निष्ठा के लिए कितना महत्वपूर्ण हैं। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 1 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. समझाओ कि कहानी में लम्बी समय तक पौलुस को शाऊल के नाम से जाना जाता था। 2. यह बताएं कि वह दमिश्क क्यों यात्रा जा रहा था। 3. ध्यान से समझो कि क्या हुआ, और जब शाऊल परमेश्वर से मिले तब क्या कहा गया था। जो खातें पौलुस ने बाद में दिए थे वह सहायक हो सकते है। **(प्रेरितों 22: 1-13, 26: 9-18)** 4. वर्णन करें कि उन्हें दमस्कुस तक ले जाने के बाद क्या हुआ और उन्हें क्या चनौती दी गई थी। 5. एक मसीही होना कभी आसान नहीं हैं। कुछ समस्याओं का वर्णन करें जो शाऊल को परमेश्वर के अनुगमन करने के शुरुआती दिनों में सामना करना पड़ा था। 6. रूपांतरण/परिवर्तन शब्द का अर्थ क्या है? रूपांतरण परमेश्वर की कृपा का एक काम है जो किसी को मसीह में नए बनाता हैं। इसे नए सिरे से जन्म लेने से जोड़िए। **(यूहन्ना 3: 3)** 7. इस पर भी विचार करें कि कैसे शाऊल को धार्मिक नहीं बनाया गया था। वह अपने रूपांतरण से पहले ही पहले धार्मिक था। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 1 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** 'शाऊल - पहले और बाद' की विषय पर एक दीवार प्रदर्शन बनाएं।	**छात्रों के लिए प्रश्न:** सीखने के इरादों में से एक चुनें और और एक ऐसी प्रार्थना लिखें जो आपके जीवन में इसका प्रभाव को व्यक्त करती है।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. अपनी स्थिति के बारे में छात्रों को चुनौती दें। 2. हनन्याह के उदाहरण से हम आज्ञाकारिता के बारे में क्या सीखते हैं? आज्ञाकारिता के बारे में जो सीखा जा सकता हैं उसके आधार पर जो हमे करना हैं उस कि एक सूची बनाए। 3. उन तरीकों के बारें में सोचो जिससे मसीही नई मसीहीयों के लिए कैसे एक प्रोत्साहन हो सकते हैं। कार्य योजना के लिए इन की एक सूची बनाएं।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. अपनी स्थिति के बारे में छात्रों को चुनौती दें। 2. उन मसीही के लिए प्रार्थना करें जो उत्पीड़न का सामना कर रहे हैं। 3. **1 तिमुथियुस 1: 12-16** पढ़ें। अविश्वासित मित्रों के साथ **पद 15** को साझा करने के बारे में सोचें।

	A9 – लेवल 3 कहानी 2 - पौलुस का अभियान विषय: परेशानियाँ।	A9 – लेवल 4 कहानी 2 - पौलुस का अभियान विषय: उनकी यात्राएं।
	बाइबल फोकस: प्रेरितों 9: 19-30 ***मुख्य पद : रोमियों 1: 16*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. कभी-कभी एक मसीही होना कठिन हो सकता है क्योंकि हर कोई सुसमाचार का क़दर नहीं करते। 2. नए मसीहियों को प्रोत्साहित करना आवश्यक हैं।	***बाइबल फोकस: प्रेरितों 11: 19-26; 13: 1-12*** ***मुख्य पद : प्रेरितों 13: 12*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. मन-परिवर्तन मसीह में नए जीवन की शुरुआत है। 2. नए मसीहियों को सिखाना महत्वपूर्ण है ताकि वे मसीही जीवन की अपनी समझ में बढ़ सके।
पहचान कराने	प्रोत्साहन के महत्व पर चर्चा करें। बच्चों को उन उदाहरणों को सांझा करना के लिए कहें, जब उन्हें जीवन में प्रोत्साहन मिला था। और समझाएं कि यह इतना महत्वपूर्ण क्यों था।	प्रोत्साहन के महत्व पर चर्चा करें। बच्चों को उन उदाहरणों को सांझा करना के लिए कहें, जब उन्हें जीवन में प्रोत्साहन मिला था। और समझाएं कि यह इतना महत्वपूर्ण क्यों था। 1 पतरस 2:2 ; 2 पतरस 3:18
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. वर्णन करें कि जब शाऊल ने दमिश्क में प्रचार करना शुरू किया तो क्या हुआ और यह भी समझाएं कि उनका संदेश क्या था। 2. समझाएं कि यहूदी क्यों उससे नफरत करते थे और यह भी कि कैसे वह भागने में कामयाब रहे। 3. शाऊल की समस्याओं की प्रकृति और लोग सुसमाचार का विरोध करने की कारणों पर चर्चा करें। सुसमाचार कि कारण शाऊल लज्जित क्यों नहीं थे? (मुख्य पद पढ़े) 4. यरूशलेम वापस आने पर उन्हें कैसी परेशानियाँ की सामना करना पड़ा? वर्णन कीजिए। 5. इस बात के बारे में बात करें कि शाऊल के लिए बरनबास कितना महत्वपूर्ण था और मसीही जीवन में प्रोत्साहन का महत्व क्या हैं। **(1 शमूएल 30: 6)** **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 2 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. स्तिफनुस की मृत्यु के बाद, मसीही दूर-दूर देशों तक बिखर गए और कुछ लोग अन्ताकिया तक पहुंचें 2. उन्होंने यीशु की सुसमाचार की प्रचार कि और कई लोगों ने विश्वास करके प्रभु की ओर फिरे। 3. नए मसीहियों की सहायता के लिए बरनबास को यरूशलेम से भेजा गया। उन्होंने महसूस किया कि यह एक बड़ा कर्तव्य हैं इसलिए उसने शाऊल को अन्ताकिया ले आया और दोनों मिलकर एक साल के लिए कलीसिया के लोगों को उपदेश दिए। 4. उस समय के आसपास पवित्र आत्मा ने कलीसिया से बरनबास और शाऊल को एक नए कर्तव्य के लिए भेजने को कहा। 5. वे साइप्रस के लिए निकले। जहां उन्होंने इलीमास नामक एक आदमी के विरोध का सामना किया जो एक प्रकार का जादू-टोना करने वाला था। उसने सिरगियुस पौलुस नमक एक प्रमुख पुरुष को मसीही बनने से रोकने कि कोशिश की। शाऊल ने साहस के साथ कहा और इलीमास अंधा हो गया। और सिरगियुस पौलुस ने यीशु पर विश्वास किया। 6. सुसमाचार के प्रचार में परमेश्वर के वचन के महत्व पर ज़ोर देना। **(प्रेरितों 11: 19-20)** 7. मसीही जीवन में बढ़ने के महत्व पर भी ज़ोर देना। **(1 पतरस 2:2)** **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 2 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** शाऊल को नमूना बनाकर मसीही जीवन की कुछ कठिनाइयों पर चर्चा करें।	**छात्रों के लिए प्रश्न:** निम्नलिखित प्रश्नों का उपयोग करके अध्याय की समीक्षा करें: क्या पौलुस और बरनबास का मिशन सफल रहा? अपना जवाब का व्याख्या कीजिए। इलीमास के साथ पौलुस के मुठभेड़ से बुरी आत्माओं पर परमेश्वर की शक्ति के बारे में हम क्या सबक सीख सकते हैं?
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. मसीही बनने के बाद कभी-कभी लोग उम्मीद करते हैं कि जीवन किसी भी समस्या के बिना होंगें। इस दृष्टिकोण को अपनाते लोगों को पौलुस क्या सलाह देंगें। 2 **कुरिन्थियों 11: 23-33** 3. कठिनाइयों का सामना कर रहे मसीहियों के लिए प्रोत्साहन की प्रार्थना लिखें। एक बुकमार्क डिजाइन करके उस पर इस प्रार्थना को लिखे। और इसे एक ऐसे मसीही को दे जो परेशानियों का सामना कर रहा हैं।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. बच्चों के साथ कुछ लोगों की जीवन में आए अद्भुत रूपांतरण कहानियों के बारें में चर्चा करें। यह कहानियाँ आपको कैसे चुनौती देती हैं? 2. बाइबल को बेहतर समझने कि तरीकों को विकसित करने के बारें में बच्चों से बात करें और अपनी ख़ुद कि बाइबल पठन की योजना का विकास करने के लिए उनकी सहायता कीजिए। ।

	A9 – लेवल 3 कहानी 3 - पौलुस का अभियान विषय: धर्मोपदेशक।	A9 – लेवल 4 कहानी 3 - प्रेरित पौलुस विषय: धर्मोपदेश।
	बाइबल फोकस: प्रेरितों 13: 1-12 ***मुख्य पद : प्रेरितों 13:12*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. पवित्र आत्मा काम कर रहा था और सुसमाचार नए देशों में किया जा रहा था। 2. सुसमाचार के प्रति शैतान का विरोध हो सकता है।	***बाइबल फोकस: प्रेरितों 13: 13-52*** ***मुख्य पद : प्रेरितों 13:2*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. मसीह के बारे में संदेश पुराने नियम में जुटा हुआ है और यह कि मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान परमेश्वर की योजना के मुताबिक था। 2. पापों की क्षमा केवल मसीह के द्वारा है।
पहचान कराने	बच्चों को परमेश्वर और शैतान के बीच संघर्ष के परिचय दे। इसका अनुरेखण वापस अदन कि वाटिका में करें और महा पतन की कहानी पर चर्चा करें। बताएं की शैतान अभी भी विभिन्न रूपों में सक्रिय है और प्रभु यीशु के सुसमाचार के उपदेश का विरोध करता हैं।	बच्चों से क्षमा के महत्व के बारे में सोचने के लिए कहें। हर रोज़ की स्थितियों के बारे में सोचे जब वे किसी को क्षमा कर सकते हैं। विचार करें कि हमें परमेश्वर की क्षमा की आवश्यकता क्यों है। चर्चा करें की कैसे पापों की क्षमा का ईसाई धर्म के संदेश के लिए मसीह केंद्रीय है। क्षमा के बारे में कुछ गलत विचारों का पता लगाएं।
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. स्तिफनुस की मृत्यु के बाद, मसीही दूर-दूर देशों तक बिखर गए और कुछ लोग अन्ताकिया तक पहुंचें 2. उन्होंने यीशु की सुसमाचार की प्रचार कि और कई लोगों ने विश्वास करके प्रभु की ओर फिरे। 3. नए मसीहियों की सहायता के लिए बरनबास को यरूशलेम से भेजा गया। उन्होंने महसूस किया कि यह एक बड़ा कर्तव्य हैं इसलिए उसने शाऊल को अन्ताकिया ले आया और दोनों मिलकर एक साल के लिए कलीसिया के लोगों को उपदेश दिए। 4. उस समय के आसपास पवित्र आत्मा ने कलीसिया से बरनबास और शाऊल को एक नए कर्तव्य के लिए भेजने को कहा। 5. वे साइप्रस के लिए निकले। जहां उन्होंने इलीमास नामक एक आदमी के विरोध का सामना किया जो एक प्रकार का जादू-टोना करने वाला था। उसने सिरगियुस पौलुस नमक एक प्रमुख पुरुष को मसीही बनने से रोकने कि कोशिश की। 6. शाऊल ने साहस के साथ कहा और इलीमास अंधा हो गया। और सिरगियुस पौलुस ने यीशु पर विश्वास किया। 7. दुष्टात्मा की वास्तविकता और कब्जे/सताने की प्रकृति पर चर्चा करे। 8. उन दिनों और आज सुसमाचार के संदेश के महत्व पर चर्चा करें। 9. इस बात पर विचार करें कि परमेश्वर का न्याय इलीमास पर क्यों पड़ा? **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 3 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. पौलुस अब अन्ताकिया (पिसिदिया) पहुँचा। 2. अपने पहले संदेश में उसने यहूदी इतिहास का विस्तृत विवरण दिया और समापन यीशु के आगमन, मृत्यु और पुनरुत्थान से किया। और उसने यह कह कर समाप्त किया कि 'यीशु के द्वारा पापों की क्षमा का समाचार तुम्हें दिया जाता हैं ' **(पद 38)** 3. आराधनालय में अपने पहले संदेश के बाद उसे अगले सब्त के दिन वापस जाने के लिए आमंत्रित किया गया था। 4. अगले सब्त के दिन लगभग पूरे शहर पौलुस को सुनने निकला जिसके कारण यहूदी नेताओं को बहुत ईर्ष्या हुआ। 5. पौलुस ने कहा कि क्योंकि उन्होंने परमेश्वर का वचन को खारिज कर दिया वह अब जातियों के पास जायेंगे। **(यशायाह 49:6)** 6. समझाएं कि यहूदी नेता मसीह की मौत क्यों चाहते थे। 7. विचार करें कि यीशु को मरना क्यों पड़ा और मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान कैसे परमेश्वर की योजना का हिस्सा था। 8. उद्धारकर्ता के रूप में मसीह की विशिष्टता के बारे में सोचें। **(पद 38 ,39** देखें) **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 3 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** इस अध्याय की समीक्षा करेने के लिए बच्चों से सचित्र व्याख्या करना के लिए कहें कि कैसे देवता शैतान को पराजित करता है।	**छात्रों के लिए प्रश्न:** सबक की समीक्षा करने के लिए आज के अध्ययन पर छात्रों को प्रश्न पूछें।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. सुसमाचार संदेश के प्रति एलीमास और सिरगियुस पौलुस की विपरीत प्रतिक्रिया के बारें में बात करें। सुसमाचार के प्रति अपनी प्रतिक्रिया देने के लिए बच्चों से कहें। 2. कई फिल्मों में आज टोना का विषय आम है। क्या मसीहियों को इन फिल्मों को देखना चाहिए? चर्चा करें।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. उद्धारकर्ता के रूप में मसीह की विशिष्टता हमारी संस्कृति को कैसे चुनौती देती है? 2. **इफिसियों 4:32** पढ़ो और बच्चों को चुनौती दें कि कैसे क्षमा के बारे में पौलुस के शब्द उन्हें प्रभावित करते है।

	A9 – लेवल 3 कहानी 4 - पौलुस का अभियान विषय: एक विभाजित शहर।	A9 – लेवल 4 कहानी 4 - पौलुस का अभियान विषय: उनकी समस्याएं।
	बाइबल फोकस: प्रेरितों 13: 13-16; 42-52 ***मुख्य पद : प्रेरितों 13: 49*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. परमेश्वर के वचन को सुनना महत्वपूर्ण है। 2. मसीह के बारे में संदेश सभी के लिए है और जो इसे प्राप्त करते है उसे संतुष्टि मिलती हैं।	***बाइबल फोकस: प्रेरितों 14: 1-28*** ***मुख्य पद : मरकुस 16: 20*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. मसीह का संदेश लोगों को विभाजित करता है और मसीह के संदेश को कुछ प्रतिक्रिया अत्यधिक तीव्र होती है। 2. मसीह के प्रति पौलुस द्वारा दिखाए गए विश्वसनीयता बहुत ही महत्वपूर्ण है।
पहचान कराने	बच्चों से पूछिए कि वे क्यों सोचते हैं कि बाइबल इतना महत्वपूर्ण है। (ध्यान दें कि इस अध्ययन के बाइबल पठन के दौरान कई बार परमेश्वर का वचन का उल्लेख किया गया है) इस विचार के प्रति परिचय दें कि बाइबल इस सन्देश पर केंद्रित है कि मसीह की सुसमाचार सभी लोगों के लिए है। उन्हें याद दिलाया कि मसीही विभिन्न सांस्कृतिक परिस्थितियों से आए है।	विश्वसनीयता / सच्चाई शब्द को परिभाषित करने के लिए बच्चों से कहे। नैत्य विश्वसनीयता के उदाहरण और जो लोग सच्चाई दिखाते हैं उसके के बारे में सोचने के लिए बच्चों से कहे। विचार करें की विश्वसनीयता/सच्चाई इतना महत्वपूर्ण क्यों है?
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. पौलुस अब अन्ताकिया (पिसिदिया) पहुँचा जहाँ उसके पहले संदेश के बाद उसे अगले सब्त के दिन वापस जाने के लिए आमंत्रित किया गया था। 2. अगले सब्त के दिन लगभग पूरे शहर पौलुस को सुनने निकला जिसके कारण यहूदी नेताओं को बहुत ईर्ष्या हुआ। 3. पौलुस ने कहा कि क्योंकि उन्होंने परमेश्वर का वचन को खारिज कर दिया वह अब जातियों के पास जायेंगे। **(यशायाह 49:6)** 4. पौलुस के दर्शकों पर ज़ोर दो। **(पद 16,42,43: 49)** 5. समझाएं कि सुसमाचार पहले यहूदियों को क्यों सुनाया गया था। 6. परमेश्वर की सुसमाचार का प्रसार कैसे हुआ। **(पद 49)** **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 4 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. जब पौलुस और बरनबास इकुनियुम पहुँचे कई यहूदियों और यूनानियों ने विश्वास किया लेकिन कुछ यहूदियों ने विरोध और कटुता को उकसाया। 2. शहर को सुसमाचार के कारण विभाजित हो गया था, लेकिन कुछ लोग पौलुस और बरनबास को पथराव करने का षडयंत्र रचा, इसलिए उन्हें लुस्त्रा से भागना पड़ा। 3. यहां परमेश्वर ने एक लंगड़ा आदमी को चंगा करने के लिए पौलुस का उपयोग किया और इस कारण शहर के लोग ने सोचा कि वे देवता है और वे उनको बलिदान देना चाहते थे। 4. उन्होंने लोगों को बताया कि वे कोशिश कर रहे थे की वे अपने बेकार मूर्तियों को छोड़कर जीवित देवता के पास आए। और उन सारी चीज़ो के बारें में बताया जो परमेश्वर हमें प्रदान करते है। **(पद 17)** 5. कुछ यहूदियों ने इकुनियुम और अन्ताकिया से आकर पौलुस पर पथराव किया और उसे मारा हुआ समझकर घसीट के शहर से बाहर ले गए। भाग्यवश पौलुस बच गया और अगले दिन वे दिरबे गए। यहाँ एक बड़ी संख्या चेले बन गए। 6. फिर वे अपने जीवन को खतरे में डालकर मसीहियों को प्रोत्साहित करने के लिए लुस्त्र, इकुनियुम और अन्ताकिया लौट आए। 7. इस विषय पर जोर दो की परमेश्वर कौन हैं। **(पद 15-17)** 8. दृढ़ता के महत्व पर विचार करें - पौलुस और बरनबास की तरह। पद 22 को ध्यान से देखें **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 4 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** इस अध्याय की समीक्षा करेने के लिए बच्चों से सचित्र व्याख्या करना के लिए कहें कि कैसे देवता शैतान को पराजित करता है।	**छात्रों के लिए प्रश्न:** 1. **पद 3** में चिन्हों और अदभुत काम का उद्देश्य क्या था? 2. इस पाठ में क्या पौलुस और बरनबास परमेश्वर के प्रति अपनी विश्वसनीयता को हद से अधिक गंभीरता से ले रहे थे? क्या परमेश्वर चाहते है कि हम उनके कर्तव्य के लिए हमारे जीवन का त्याग दें।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. पद में मसीह के बारे में संदेश के प्रति अन्यजातियों की प्रतिक्रिया पर विचार करें। मसीह के संदेश के बारे में हमारी प्रतिक्रिया के बारे में हम इससे क्या सीख सकते हैं? 2. अन्य समूह को मसीह के संदेश लाने के लिए प्रयास करते एक मिशनरी समाज के काम पर विचार करें।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. मसीही जीवन के आधार पर 'विश्वासयोग्य' शब्द के लिए एक व्याख्या लिखिए। 2. यह ध्यान में रकते हुए एक दीवार प्रदर्शित बनाएं की आज के समाज में हमारी मूर्तिपूजा को मसीह के संदेश कैसे चुनौती देता हैं।

	A10 – लेवल 3 कहानी 1 - पौलुस का अभियान विषय: परमेश्वर के लिए कष्ट सहना।	A10 – लेवल 4 कहानी 1 - पौलुस का अभियान विषय: फिलिप्पी में पौलुस।
	बाइबल फोकस: प्रेरितों 14: 1-21 *मुख्य पद : 1 पतरस 4: 16* **हम सीख रहे हैं कि:** 1. मसीही कभी-कभी उनके विश्वास के लिए पीड़ित होते हैं और जब चीजें मुश्किल हो जाती हैं तब उन्हें हार नहीं मानना चाहिए। 2. मसीहियों को जीवित परमेश्वर पर विश्वास है जो निर्माता है और हमारे अन्नदाता है।	*बाइबल फोकस: प्रेरितों 16: 9-40* *मुख्य पद : प्रेरितों 16: 31* **हम सीख रहे हैं कि:** 1. परमेश्वर की मार्गदर्शन को सुनने और पालन करना महत्वपूर्ण है। 2. परमेश्वर लोगों के दिलों को खुलता है और सिर्फ प्रभु यीशु मसीह के द्वारा ही पापों से मुक्ति मिलते हैं।
पहचान कराने	बच्चों के साथ पता लगाएं कि सृष्टिकर्ता परमेश्वर पर विश्वास करना महत्वपूर्ण क्यों है। परमेश्वर के सामने जिम्मेदारी और उत्तरदायित्व के विचार पर ध्यान केंद्रित करें।	इस सवाल पर विचार करे कि हम सभी को परमेश्वर के उद्धार की आवश्यकता क्यों है? परमेश्वर की मोक्ष की प्रकृति के बारें में चर्चा करे और व्याख्या करें की कैसे हमें अपने कर्मो से नहीं मगर परमेश्वर पर विश्वास करने से उद्धार मिलता हैं।
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. जब पौलुस और बरनबास इकुनियुम पहुँचे कई यहूदियों और यूनानियों ने विश्वास किया लेकिन कुछ यहूदियों ने विरोध और कटुता को उकसाया। 2. शहर को सुसमाचार के कारण विभाजित हो गया था, लेकिन कुछ लोग पौलुस और बरनबास को पथराव करने का षडयंत्र रचा, इसलिए उन्हें लुस्त्रा से भागना पड़ा। 3. यहां परमेश्वर ने एक लंगड़ा आदमी को चंगा करने के लिए पौलुस का उपयोग किया और इस कारण शहर के लोग ने सोचा कि वे देवता है और वे उनको बलिदान देना चाहते थे। 4. उन्होंने लोगों को बताया कि वे कोशिश कर रहे थे की वे अपने बेकार मूर्तियों को छोड़कर जीवित देवता के पास आए। और उन सारी चीज़ो के बारें में बताया जो परमेश्वर हमें प्रदान करते है। **(पद 17)** 5. कुछ यहूदियों ने इकुनियुम और अन्ताकिया से आकर पौलुस पर पथराव किया और उसे मारा हुआ समझकर घसीट के शहर से बाहर ले गए। भाग्यवश पौलुस बच गया और अगले दिन वे दिरबे गए। यहाँ एक बड़ी संख्या चेले बन गए। 6. फिर वे अपने जीवन को खतरे में डालकर मसीहियों को प्रोत्साहित करने के लिए लुस्त्र, इकुनियुम और अन्ताकिया लौट आए। 7. इस विषय पर जोर दो की परमेश्वर कौन हैं। **(पद 15-17)** 8. दृढ़ता के महत्व पर विचार करें - पौलुस और बरनबास की तरह। **पद 22** को ध्यान से देखें **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 1 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. पौलुस को स्पष्ट रूप से निर्देशन था की वह आसिया के अन्य भागों में न जाए। लेकिन एक रात उन्हें मकिदुनी (यूरोप) जाने के लिए एक दर्शन मिला। 2. उन घटनाओं का वर्णन करें जिसकी वजह से सुसमाचार यूरोप तक पहुंचा। **(पद 9)** 3. फिलिप्पी में उन्होंने नदी के किनारे से प्रार्थना करते हुए महिलाओं के एक समूह से मुलाकात की। इनमें लुदिया भी शामिल थी। 4. समझाओ की परमेश्वर लुदिया कि मन खोलने का मतलब क्या है। **(पद 14)** 5. जब पौलुस भावी कहने वाली एक दासी में से एक दुष्ट आत्मा को बाहर आने के लिए कहा, सीलास और उसे एक स्थानीय बन्दीगृह जाना पड़ा। 6. स्पष्ट रूप से समझाएं की दरोगे का सवाल क्या था और पौलुस ने क्या जवाब दिया। **(प्रेरितों 16:31)** 7. उद्धार के लिए परमेश्वर की केंद्रीयता पर जोर दो। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 1 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** बाइबल पाठ को **निर्गमन 20: 1-6** के साथ जोड़िए। जीवित परमेश्वर की वास्तविकता को समझने के लिए छात्रों की मदद करें। विचार करें कि आज के समाज में किस प्रकार की मूर्तियां हमारे और परमेश्वर के बीच आ सकती हैं?	**छात्रों के लिए प्रश्न:** निम्नलिखित प्रश्नों के माध्यम से सबक की समीक्षा करें: 1. दरोगे कि रूपांतरण के बाद की घटनाओं का वर्णन करें। 2. इस पद में बपतिस्मा की प्रकृति और योग्यता क्या है? **(पद 15, 31-33)**
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. परमेश्वर के सामने उत्तरदायित्व पर विचार करें और सोचे की यह कैसे हमें चुनौती देनी चाहिए? इस से हमारे मसीही जीवन में कैसा बदलाव आना चाहिए? 2. **पद 16** हमें वीरपूजा के बारे में क्या बताती है ?	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. इस विचार को समझने के लिए कि उद्धार केवल भगवान की कृपा से है। 2. विश्वासियों के लिए बपतिस्मा का महत्व।

	A10 – लेवल 3 कहानी 2 - पौलुस का अभियान विषय: जीवन के लिए एक साथी।	A10 – लेवल 4 कहानी 2 - पौलुस का अभियान विषय: पौलुस थिस्सलुनीके और बिरीया में।
	बाइबल फोकस: प्रेरितों 16: 1-3; 2 तीमुथियुस 1: 1-5 ***मुख्य पद : 2 तीमुथियुस 3: 15*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. पवित्र शास्त्रों को पढ़ने और समझने से हमें उद्धार के बारे में ज्ञान प्राप्त होता है। 2. यह महत्वपूर्ण है कि हमें मसीही मित्र होना चाहिए और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करना हैं।	***बाइबल फोकस: प्रेरितों 17: 1-14*** ***मुख्य पद : प्रेरितों 17: 11*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. यीशु मसीह है, जिसके बारें में भविष्यवाणी पुराने नियम में की गई थी, और जिनकी मृत्यु और पुनरुत्थान आवश्यक थे। 2. मसीही धर्म कि बारें में समझने के लिए पवित्र शास्त्र को खोजना महत्वपूर्ण है।
पहचान कराने	इस बात पर चर्चा करें कि कैसी चीजें हैं जो अच्छे या बुरे के लिए हमारे जीवन को सबसे अधिक प्रभावित करती हैं। छात्रों के साथ तलाशें की हमारे जीवन में मसीही लोगों का प्रभाव पड़ने का महत्व कितना बड़ा हैं। इस बारे में बात करें कि मसीही धर्म से किसने आप पर प्रभाव डाला और किस कैसे प्रभावित किया?	बच्चों से पूछें की उनके लिए सबसे ख़ास लोग कौन है और वे ऐसे क्यों सोचते हैं। समझाएं कि मसीही सन्देश एक अप्रतिम व्यक्ति के बारे में है। बच्चों को प्रेरितों 17: 1-14 पढ़ के सुनाइए।
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. तीमुथियुस के परिवार के बारे में वर्णन कीजिए। 2. यह समझाएं कि तीमुथियुस का विश्वास के लिए उसकी दादी और माँ कि योगदान कितनी महत्वपूर्ण थी। 3. सोचें कि एक मसीही परिवार के लिए महत्व क्यों देना चाहिए। 4. विचार करें कि पौलुस क्यों मानता था कि तीमुथियुस को खतना करना जरूरी है। इस से हम क्या सबक सीख सकते हैं? 5. तीमुथियुस पौलुस के साथ अपनी यात्रा शुरू की और उसके लिए बड़ा सहायक बना। 6. तीमुथियुस को लिखे अपने पत्र में पौलुस के शब्दों पर विचार कीजिए। **(2 तीमुथियुस 1: 3-5)** **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 2 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. पौलुस फिलिप्पी से थिस्सलुनीके गए जहां उन्होंने आराधनालय में प्रचार किया। थिस्सलुनीके कि आराधनालय में पौलुस की संदेश का व्याख्या कीजिए। 2. यह भी समझाएं कि 'मसीहा' शीर्षक का अर्थ क्या है। इसका मतलब 'यहोवा का अभिषिक्त उद्धारकर्ता' 3. संदेश के निहितार्थ के बारे में सोचें। 4. निम्नलिखित शब्दों पर विचार करें: 'जीन्होंने दुनिया को उल्टा पुलटा कर दिया है' **(पद 6)** 5. पौलुस और सिलास को एक बार फिर रात को जल्दी से निकलना पड़ा और वे फिर बिरिया गए। 6. बिरिया कि यहूदियों थिस्सलुनीके कि यहूदियों से बहुत अलग थे, वे हर दिन पवित्र शास्त्रों का अध्ययन किया करते थे। **(पद 11,12)** 7. परन्तु वहाँ अधिक विरोध हुआ और पौलुस को एथेंस में ले जाया गया। 8. पौलुस और सिलास को जो प्रतिकूलता का सामना करना पड़ा उसे आज के मसीहियों की कठिनाईयों से तुलना करें। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 2 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** मुख्य पद को सीखिए और कक्षा के साथ चर्चा करें कि कैसे इस पद आज का सबक को सारांशित करता है।	**छात्रों के लिए प्रश्न:** **यहोशू 1:8** को पढ़िए और उसकी तुलना मुख्य पद **(प्रेरितों 17: 11)** से करें। मसीही होने से हमारे लिए क्या चुनौतियां हैं?
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. मसीही दोस्तों के होने के महत्व को समझने के लिए। 2. मसीही दोस्तों को तलाशने के लिए। 3. हमारे मित्रों और रिश्तेदारों के लिए प्रार्थना करने के लिए कि वे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. बाइबल पढ़ने और बाइबल पर हमारे विचारों को आधार करने का महत्व। (मुख्य पद पर गौर करें) 2. यह विश्वास की यीशु राजा है हमारे जीवन में कैसे परिवर्तन ला सकता है।

	A10 – लेवल 3 कहानी 3 - पौलुस का अभियान विषय: पौलुस बन्दीगृह में।	A10 – लेवल 4 कहानी 3 - पौलुस का अभियान विषय: पौलुस एथेंस और कुरिन्थुस में।
	बाइबल फोकस: प्रेरितों 16: 16-34 ***मुख्य पद : प्रेरितों 16: 31*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. प्रभु यीशु मसीह द्वारा ही उद्धार मिलता है। 2. जो उद्धार प्राप्त करता हैं उन्हें बपतिस्मा लेना चाहिए।	***बाइबल फोकस: प्रेरितों 17: 15-34; 18: 1-18*** ***मुख्य पद : प्रेरितों 17: 30,31*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. पश्चाताप परमेश्वर द्वारा एक आदेश हैं। 2. परमेश्वर दुनिया का न्याय करेगा।
पहचान कराने	बच्चों के साथ ऐसी कोई घटना के बारे में चर्चा करे जब उन्हें किसी मुसीबत से बचाया गया था। उद्धार, उद्धारकर्ता, मसीह शब्दों के अर्थ को समझाने के लिए इस कहानी का उपयोग करें। बच्चों को साझा करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं यदि वे अपने जीवन में उद्धार प्राप्त किया हैं।	बच्चों से पश्चाताप की परिभाषा पूछियें। पश्चाताप की अवधारणा को समझाने के लिए 1 थिस्सलुनीकियों 1:9 का प्रयोग करें। उद्धार के लिए परमेश्वर के पास जाने के विचार पर ध्यान दें और इस के लिए हमारे जीवन के पुराने तरीके से पीछे छोड़ने आवश्यक हैं। सुसमाचार के द्वारा परिवर्तित लोगों की साक्ष्यों को पश्चाताप के अर्थ को सुदृढ़ करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. उन घटनाओं का वर्णन करें जिसकी वजह से सुसमाचार यूरोप तक पहुंचा। **(पद 9)** 2. फिलिप्पी में उन्होंने नदी के किनारे से प्रार्थना करते हुए महिलाओं के एक समूह से मुलाकात की। इनमें लुदिया भी शामिल थी। 3. समझाओ की परमेश्वर लुदिया कि मन खोलने का मतलब क्या है। **(पद 14)** 4. जब पौलुस भावी कहने वाली एक दासी में से एक दुष्ट आत्मा को बाहर आने के लिए कहा, सीलास और उसे एक स्थानीय बन्दीगृह जाना पड़ा। 5. एक भूकंप आया था और सभी सब के बन्धन खुल गए थे। दरोगा खुद को मारने ही वाला था लेकिन पौलुस ने आश्वासन दिया कि कोई भी नहीं बच के नहीं गया था। 6. स्पष्ट रूप से समझाएं की दरोगे का सवाल क्या था और पौलुस ने क्या जवाब दिया। **(प्रेरितों 16:31)** 7. यीशु के नाम पर अधिकार के बारे में जोर देना। **(पद 18)** 8. समझाओ कि कभी-कभी मसीही के साथ भी अन्यायपूर्ण ढंग से व्यवहार किया जा सकता है। **(पद 23)** **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 3 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. पौलुस एथेंस में पहुंचा और अपने सहयोगियों के इंतज़ार करते हुए टहल रहा था। वह वहाँ के मूर्तियों की संख्या से परेशान है। 2. चौक और आराधनालयों में पौलुस यीशु के बारे में उपदेश देना शुरू किया। 3. पौलुस को एक केंद्रीय स्थान पर ले जाया गया जहां उससे नए उपदेश की व्याख्या करने के लिए कहा गया। 4. पौलुस ने महान सृष्टिकर्ता परमेश्वर के बारे में बताया उन्होंने यह भी कहा कि वे हम में से किसी से भी नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि परमेश्वर दुनिया का न्याय करेंगे उस नियुक्त व्यक्ति के द्वारा जिसे वह मरे हुओं में से जी उठाया था। 5. जब उन्होंने पुनरुत्थान के बारे में सुना तो ज्यादातर लोग उसका मजाक उडाया। लेकिन कुछ लोगों ने विश्वास किया। पौलुस जल्द ही कुरिन्थुस चले गए। 6. यहां उन्होंने अक्विला और प्रिस्किल्ला से मुलाकात की जो उनके सहायक बने। वह अठारह महीनों के लिए कुरिन्थुस में रहे और बहुत से लोग मसीही बन गए। 7. **प्रेरितों 18: 9** - परमेश्वर ने उन्हें आश्वासन दिया कि कुरिन्थुस में उन्हें सुरक्षित रखा जाएगा। 8. **पद 24-31** में पौलुस जो परमेश्वर के बारे में सिखाता है उस पर जोर दे। 9. न्याय की प्रकृति के बारे में सोचो। 10. विचार करें कि एथेंस और कुरिन्थुस में पौलुस के संदेश पर लोगों ने क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 3 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** फिलिपी में पौलुस और सिलास की कहानी पर एक भित्तिचित्र बोर्ड बनाएं।	**छात्रों के लिए प्रश्न:** एथेंस और कुरिन्थुस में पौलुस कि उपदेशों की प्रस्तुति को तुलना करें। क्या उनके प्रस्तुतिकरण में कोई मतभेद था? क्यों?
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार पाने के महत्व के बारे में जानना। 2. सरेआम बपतिस्मा से मसीह के साथ तादात्म्य स्थापित करना में।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. पश्चाताप के महत्व के बारे में और कैसे मसीही रोज़ अपने पापों को छोड़कर परमेश्वर की ओर मुड़ना चाहिए। 2. दूसरों के साथ सुसमाचार साझा करने के बारे में और कैसे परमेश्वर एक दिन दुनिया का न्याय करेंगे।

	A10 – लेवल 3 कहानी 4 - पौलुस का अभियान विषय: एथेंस शहर।	A10 – लेवल 4 कहानी 4 - पौलुस का अभियान विषय: पौलुस इफिसुस में।
	बाइबल फोकस: प्रेरितों 17: 10-34 ***मुख्य पद : प्रेरितों 17: 30*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. परमेश्वर जीवते परमेश्वर है जो पृथ्वी को बनाया है। 2. परमेश्वर सभी लोगों को पश्चाताप करने के लिए आज्ञा देता है। 3. परमेश्वर धर्म से जगत का न्याय करेगा।	***बाइबल फोकस: प्रेरितों 19: 1-41*** ***मुख्य पद : इफ़िसियों 2: 8, 9*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. परमेश्वर का वचन और उनका काम एथेंस में फैलता है। 2. प्रभु यीशु का नाम का महत्व बढ़ता गया।
पहचान कराने	बच्चों से पूछें की वे मूर्तियों के बारें में क्या समझते हैं। उन्हें मूर्ति शब्द की परिभाषा के लिए पूछिए। निर्गमन 20 मं लिखे गए पहले दो आज्ञाओं की चर्चा करें। पश्चाताप के अर्थ को समझाने के लिए **1 थिस्सलुनीकियों 1: 9** का उपयोग करें।	अध्ययन 3 में सीखा सबक की समीक्षा करें। पश्चाताप के विषय में और रोजमर्रा की जिंदगी में इसका क्या अर्थ हो सकता है इसके बारें में सोचें। इस विचार को व्याख्या करें कि पश्चाताप जीवन शैली में बदलाव लाता है। **प्रेरितों 19: 18-20** पर चर्चा करें।
पूरा करने	***बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।*** ***चर्चा और व्याख्या करें:*** 1. पौलुस एथेंस में पहुंचा और अपने सहयोगियों के इंतज़ार करते हुए टहल रहा था। वह वहाँ के मूर्तियों की संख्या से परेशान है। 2. चौक और आराधनालयों में पौलुस यीशु के बारे में उपदेश देना शुरू किया। 3. पौलुस को एक केंद्रीय स्थान पर ले जाया गया जहां उससे नए उपदेश की व्याख्या करने के लिए कहा गया। 4. पौलुस ने महान सृष्टिकर्ता परमेश्वर के बारे में बताया उन्होंने यह भी कहा कि वे हम में से किसी से भी नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि परमेश्वर दुनिया का न्याय करेंगे उस नियुक्त व्यक्ति के द्वारा जिसे वह मरे हुओं में से जी उठाया था। 5. जब उन्होंने पुनरुत्थान के बारे में सुना तो ज्यादातर लोग उसका मजाक उडाया। लेकिन कुछ लोगों ने विश्वास किया। पौलुस जल्द ही कुरिन्थुस चले गए। 6. **पद 24-31** में पौलुस जो परमेश्वर के बारे में सिखाता है उस पर जोर दे। 7. पुनरुत्थान के महत्व पर ज़ोर देना। **(पद 31)** 8. पौलुस के संदेश पर लोगों ने क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की। **(पद 32-34)** **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 4 को पूरा करें।**	***बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।*** ***चर्चा और व्याख्या करें:*** 1. पौलुस इफिसुस जाता है जहां वह कुछ चेलों से मिलते हैं जिन्हे पवित्र आत्मा नहीं मिले थे। 2. समझाएं कि पौलुस यूहन्ना के चेलों को बपतिस्मा देना आवश्यक क्यों था। 3. आराधनालय के यहूदियों ने एक बार फिर पौलुस कि उपदेश को खारिज कर दिया था, तो वह वाद-विवाद करने एक पाठशाला में चले गए और दो साल तक वही रहे। 4. परमेश्वर ने पौलुस के द्वारा असाधारण अलौकिक कर्म किए। **(पद 11)** पौलुस द्वारा दिखाया गया पवित्र आत्मा की शक्ति के परिणामस्वरूप कई लोग विश्वास करके अपने विश्वास को सरेआम घोषित किए। समझाएं कि उन्होंने क्या किया था। 5. इफिसुस में दंगें होने की कारणों को संक्षेप में वर्णन करें। **(पद 23-41)** 6. परमेश्वर के राज्य की अर्थ की व्याख्या कीजिए। **(पद 8)** 7. वर्णन करें की कैसे परमेश्वर का वचन इफिसुस में प्रबल हुए। **(पद 20)** 8. चर्चा करें कि नए मसीही को अपने पिछले व्यवहारों और आदतों से कैसे निपटना पड़ सकता है। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 4 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** कक्षा के साथ चर्चा करें कि सुसमाचार कैसे आपके समुदाय में एक चुनौतीपूर्ण तरीके से प्रस्तुत किया जा सकता है।	**छात्रों के लिए प्रश्न:** एक नक्शा बनाएं, जिसका शीर्षक 'सुसमाचार इफिसुस आता हैं' हैं। **प्रेरितों 19** में वर्णित घटनाओं पर एक अख़बार लेख लिखे।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. व्यक्तिगत पश्चाताप के बारे में। पाप से पश्चाताप करके परमेश्वर की ओर मुड़ने का अर्थ क्या हैं ? 2. सुसमाचार के महत्व के बारे में। सुसमाचार के संदेश को हम कैसे साझा कर सकते हैं ?	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1 मसीही धर्म को 'मार्ग' के रूप में जाना जाता है। **(पद 9)** इसका क्या मतलब है? यह हमें कैसे चुनौती देता है? 2. **पद 35-41** में नगर के मंत्री के व्यवहार से हमारे सार्वजनिक कर्तव्यों के बारे में हम क्या सबक सीख सकते है?

	A11 – लेवल 3 कहानी 1 - पौलुस का अभियान विषय: सांझा करना।	A11 – लेवल 4 कहानी 1 - पौलुस की परीक्षा विषय: यरूशलेम और भीड़।
	बाइबल फोकस: प्रेरितों 18: 1-11 ***मुख्य पद : प्रेरितों 18: 9,10*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. जहां कहीं भी पौलुस गया उसका का संदेश यह था की यीशु ही मसीह हैं। 2. परमेश्वर पौलुस के साथ थे और एक दर्शन द्वारा उसे प्रोत्साहित किया।	***बाइबल फोकस: प्रेरितों 21: 17-40; 1-30*** ***मुख्य पद : प्रेरितों 22: 14, 15*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. आराधनालय में गिरफ्तार होने के बाद पौलुस ने भीड़ को अपनी गवाही दी। 2. यहूदियों को इस बात पर नफरत था कि अन्यजातियों ने सुसमाचार को प्राप्त किया और अनुकूल प्रतिक्रिया दिए। 3. रोमी नागरिकों ने पौलुस को कोड़े मरना शुरू किया तब पौलुस ने उसे गुहार की।
पहचान कराने	बच्चों को अपने खुद के अनुभव से एक कहानी बताएं कि कैसे परमेश्वर ने आपको प्रोत्साहित किया था। मसीही जीवन में प्रोत्साहन के अर्थ और महत्व पर चर्चा करें। बच्चों से उन्हें मिले प्रोत्साहनों के उदाहरण देने के लिए कहें।	संक्षेप में समझाएं की जब पौलुस जरूशलम आया तो उन्हें कैसे विपक्ष का सामना करने पड़ा ।उन मसीहियों के उदाहरण दो जिन्होंने परमेश्वर के लिए गवाह देने पर पीड़ा सहने से डरते नहीं थे। बच्चों से पूछिए कि एक मसीही ऐसे क्यों करेगें।
पूरा करने	बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें। चर्चा और व्याख्या करें: 1. पौलुस कुरिन्थुस में पहुँचते है, और एक्विला और प्रिस्किल्ला से मिलता है जो उसके सहायक बनते हैं। 2. हमेशा की तरह सब्त के दिन वह आराधनालय जाते हैं यहूदियों को समझाने के लिए कि यीशु ही वह मसीहा था जिनका वे इंतजार कर रहे थे। 3. जब यहूदी विरोध और निन्दा करने लगे तो पौलुस उस जगह छोड़कर अन्यजातियों को सुसमाचार सुनाने चले गए। कई लोगों ने विश्वास किया और बपतिस्मा लिया। 4. **18: 9** परमेश्वर ने पौलुस को आश्वासन दिया कि कुरिन्थुस में वह पॉल के साथ होंगे और उसे सुरक्षित रखेंगे। यह समझाएं कि पौलुस के लिए यह कितना बड़ा प्रोत्साहन हुआ होगा। 5. इस पर ध्यान केन्द्रित करना की कैसे पौलुस ने सुसमाचार प्रचार किया। **(पद 4 & 11)** 6. परमेश्वर का वचन कुरिन्थुस में कैसे फैला और बपतिस्मा के महत्व के बारें में विचार करें। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 1 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. पौलुस जेरूसलेम पहुंचकर मंदिर जाता है। उसे मंदिर में एक अन्यजाति की आदमी को ले जाने का आरोप लगाया गया और वहाँ एक दंगा हुआ। 2. उसे पलटन के सरदार द्वारा बचाया गया और गढ़े कि सीढ़ी पर खड़े होकर भीड़ से बात करने की अनुमति दी। 3. पौलुस ने बहुत ही स्पष्ट गवाही दी। **(22: 1-22)** जब उन्होंने ज़िक्र किया कि उन्हें अन्यजातियों के पास भी भेजा गया हैं वहाँ एक और दंगा शुरू हुआ। 4. उसे गढ़े में ले जाया गया और उन्हें जरूर कोड़े मारते अगर उसने यह नहीं बताया होता कि वह एक रोमी नागरिक हैं और दोषी पाए बिना उसे दंडित नहीं किया जा सकता तो । 5. इस बात पर ज़ोर देना है कि पौलुस मंदिर क्यों गया था। 6. पौलुस के रूपांतरण की प्रकृति पर भी ध्यान दो। 7. समझाओ कि भीड़ भी पौलुस के खिलाफ थे। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 1 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** एक प्रश्नोत्तरी के माध्यम से इस कहानी की समीक्षा करें।	**छात्रों के लिए प्रश्न:** कक्षा में वाद विवाद करें कि जब पौलुस यरूशलेम में था तब उसका मंदिर में प्रवेश करना क्या समझदारी था।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. भजन संहिता 23 पढ़ो और सोचें कि कैसे परमेश्वर की उपस्थिति का वादे मसीहियों को कैसे प्रोत्साहित करती है। 2. उन तरीकों पर विचार करें जिनसे हम लोगों को उनके साथ रहके प्रोत्साहित कर सकते हैं।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. दुनिया भर में मसीही को दैनिक आधार पर गिरफ्तार किया जाता है।ऐसे पीड़ा सहते मसीह के साक्षीयो के लिए प्रार्थना करने एक नियमित समय का आयोजन करें। 2. बच्चों से अपने सप्ताह की समीक्षा करने को कहें और उन अवसरों पर विचार करने के लिए कहें जब उसने मसीह के बारें में गवाही देने से चूक गए थे। बच्चों से भविष्य में परमेश्वर कि गवाही देने के लिए धैर्य और ईमानदारी पाने परमेश्वर से मदद मांगने को कहें।

	A11 – लेवल 3 कहानी 2 - पौलुस का अभियान विषय: उसे मारने की साजिश।	A11 – लेवल 4 कहानी 2 - पौलुस की परीक्षा विषय: कैसरिया और हाकिम।
	बाइबल फोकस: प्रेरितों 23: 10-24; 24: 22-27 ***मुख्य पद : भजन संहिता 18: 30*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. परमेश्वर ने पौलुस को प्रोत्साहित किया जब यहूदी उसे मारने की कोशिश की। 2. पौलुस सच्चाई से एक कैदी के रूप में भी परमेश्वर के वचन का प्रचार करते रहे।	***बाइबल फोकस: प्रेरितों 23: 23-26; 24: 1-27, 25: 1-12*** ***मुख्य पद : 1पतरस 3: 15*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. पौलुस को सुरक्षा के लिए कैसरिया ले जाया गया और अंत में उसने कैसर से अनुरोध किया। 2. विभिन्न परीक्षणों का सामना करते हुए भी पौलुस ने धर्म, संयम और आने वाले न्याय के बारे में प्रचार किया। **(24:25)**
पहचान कराने	पौलुस के दिनों में रोमन साम्राज्य की शक्ति के बारें में बच्चों को याद दिलाना। समझाएं कि एक ढाल (कवच) क्या है। प्राचीन ग्रीको-रोमन दुनिया से और ढाल (कवच)पहने हुए रोमी सैनिक का दृष्टान्त प्रदान करे। व्याख्या करें की प्रभु कैसे उनके लोगों के लिए एक कवच हैं। छात्रों को मुख्य पद पढ़ने प्रोत्साहित करें।	क्लेश के समय मसीह के लिए भयरहित खड़े हुए कुछ लोगों के बारे में चर्चा करें।
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. पौलुस को धार्मिक यहूदियों की परिषद (महासभा) के सामने लाया गया। 2. एक बड़ा हल्ला मचा क्योंकि पौलुस ने पुनरुत्थान का ज़िक्र किया था। कुछ लोगों ने विश्वास किया, लेकिन दूसरों ने नहीं किया, तो वहां पर झगड़ा हुई। **(23:9)** 3. पौलुस की ज़िंदगी खतरे में थी, इसलिए पलटन के सरदार ने उन्हें बचाया। 4. उस रात प्रभु पौलुस के पास खड़ा था और उन्हें साहस रखने को कहा है क्योंकि वह सुसमाचार फैलाने के लिए उसे रोम जाना था। 5. कुछ यहूदियों ने शपथ ली थी कि जब तक पौलुस को मार न डाले तब तक वे न खाएंगे या पीएंगे। और उन्होंने उसे मारने की साजिश बनाई। 6. भाग्यवश, पौलुस के भांजे ने साजिश के बारे में सुना और उसने पलटन के सरदार को बताया और उसने संरक्षण देकर कैसरिया भेजा। 7. पौलुस को रोमी हाकिम फेस्तुस के सामने हाजिर होना पड़ा और एक बार फिर उसने सुसमाचार का व्याख्या किया। 8. उस संदेश पर जोर दो जो पौलुस ने फेलिक्स को दिया और आज हमारे लिए इसकी प्रासंगिकता क्या हैं। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 2 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. पॉलस को अपनी सुरक्षा के लिए कैसरिया ले गया और हाकिम फेलिक्स के सामने प्रस्तुत किया गया। 2. फिर फेलिक्स के सामने एक मुकदमा चला जब यहूदी नेताओं ने पौलुस पर मंदिर को अपमानित करने और दंगों का कारण होने का आरोप लगाया। 3. पौलुस अपने आरोपियों का जवाब देता है और फेलिक्स और द्रूसिल्ला ने पौलुस को बातचीत के लिए बुलाया। पौलुस ने स्पष्ट रूप से यीशु मसीह के बारें में बताया। **(24:24)** 4. पौलुस को दो साल तक बन्दीगृह में डाला गया जब तक कि एक नया हाकिम नहीं आया। 5. अब पौलुस को फेस्तुस के सामने प्रस्तुत किया गया और फिर यहूदी नेता आकर उस पर आरोप लगाया। पौलुस यरूशलेम जाने से इनकार करता है और कैसर और फेस्तुस से अनुरोध करता है कि वह रोम जाएंगे। 6. चर्चा करे की कैसे पौलुस फेलिक्स से अपने आप का बचाव करता है। 7. इस पर विचार करें की फेलिक्स पौलुस की उपदेश पर क्यों भयभीत हुए। **(24:25)** 8. इस बारे में सोचें कि पौलुस कैसर से अनुरोध क्यों किया और इसका मतलब क्या है। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 2 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** इस विषय पर एक निबंध लिखें:'परमेश्वर के वादे के लिए पौलुस की प्रतीक्षा'	**छात्रों के लिए प्रश्न:** 'पौलुस यीशु मसीह के लिए खड़ा होता है' शीर्षक के साथ एक भित्तिचित्र बोर्ड बनाओ।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. परमेश्वर के वचन के बारे में सोचो जो रात के दौरान उसने पौलुस को दिया था। ऐसे कुछ या कोई था जो यह वादा को सच होने से रोक सकते थे? यह हक़ीक़त आज हमें कैसे प्रोत्साहित करता है? 2. परमेश्वर के वचन को सुनने पर फेलिक्स भयभीत हुआ। **(प्रेरितों 24:25)** क्या हम भी परमेश्वर के वचन पर भयभीत होते हैं?	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. **2 तीमुथियुस 2:3** को पढ़ें और विचार करें। मसीही होने से हमें जो कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है उसकी एक सूची बनाएं। इस सूची के बगल में यह लिखे कि परमेश्वर ने हमें प्रोत्साहित करके कैसे मुश्किल समय में हमारा साथ दिया। 2. पौलुस ने सुसमाचार फैलाने में रोमन नागरिकता का इस्तेमाल किया। सुसमाचार फैलाने के लिए हम उन सुविधाों का उपयोग कैसे कर सकते हैं?

	A11 – लेवल 3 कहानी 3 - पौलुस का अभियान विषय: राजा के सामने।	A11 – लेवल 4 कहानी 3 - पौलुस की परीक्षा विषय: कैसरिया और राजा।
	बाइबल फोकस: प्रेरितों 25: 13-22; 26: 13-32 *मुख्य पद : प्रेरितों 26: 22* **हम सीख रहे हैं कि:** 1. अब पौलुस को फेस्तुस के सामने खुद का बचाव करना पड़ा। 2. राजा अग्रिप्पा एक मसीही बनने के लिए तकरीबन राजी हो गए थे।	*बाइबल फोकस: प्रेरितों 25: 13-27; 26: 1-32* *मुख्य पद : प्रेरितों 26: 28* **हम सीख रहे हैं कि:** 1. परमेश्वर पौलुस के जीवन में अंतरित करते हैं। फेस्तुस ने पौलुस को मौत के लिए अयोग्य समझा जबकि अग्रिप्पा ने सोचा कि उसे मुक्त कर देना चाहिए। 2. पौलुस ने स्पष्ट रूप से सुसमाचार का संदेश घोषित किया और मसीही बनने के लिए अग्रिप्पा को मनाने की कोशिश की।
पहचान कराने	बच्चों से पूछें की कोई मसीही कैसे बन सकता है? समझाओ कि लोग दबाव से मसीही नहीं बनते। चर्चा करे की कैसे किसी को मसीही बना सकते है।	बच्चों के साथ डर के विचार पर चर्चा करें। उनसे अपने सबसे बुरे भय का वर्णन करने के लिए कहें। भयभीत स्थितियों के बीच में परमेश्वर के वादे के महत्व पर विचार करें। **(भजन संहिता 23:4)**
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. पौलुस दो साल तक जेल में रहा था। अब नया हाकिम है फेस्तुस। यहूदी चाहते थे कि वह पौलुस को सुनवाई के लिए यरूशलेम लाया जाए लेकिन पौलुस ने कहा कि वह रोम में सुनवाई चाहता था। 2. राजा अग्रिप्पा और उनकी पत्नी बिरनीके कैसरिया पहुंचते हैं और कैदी पौलुस के बारे में सुनना चाहते हैं। 3. पौलुस को अग्रिप्पा के सामने लाया जाता है। 4. पौलुस उसे अपने जीवन की कहानी बताते हैं। **(26: 1-23)** 5. फेस्तुस कहता है कि वह पागल है ! अग्रिप्पा स्वीकार करता है कि वह लगभग एक ईसाई होने के लिए राजी हो गया है। दोनों सहमत हो सकते हैं कि पौलुस को मुक्त किया जा सकता है। लेकिन क्योंकि उन्होंने कैंसर से अनुरोध की है तो उसे रोम में जाना पड़ेंगे। 6. फेस्तुस के सामने पौलुस की प्रतिवाद और फैसले पर ध्यान दे। **(26: 24,25)** विचार करें कि पौलुस ने अग्रिप्पा को एक मसीही होने के लिए कैसे प्रेरित किया। 7. इस बारे में सोचें कि कैसे पौलुस ने अग्रिप्पा के बयान का जवाब दिया। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 3 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. पौलुस दो साल तक जेल में रहा था। अब नया हाकिम है फेस्तुस। यहूदी चाहते थे कि वह पौलुस को सुनवाई के लिए यरूशलेम लाया जाए लेकिन पौलुस ने कहा कि वह रोम में सुनवाई चाहता था। 2. राजा अग्रिप्पा और उनकी पत्नी बिरनीके कैसरिया पहुंचते हैं और कैदी पौलुस के बारे में सुनना चाहते हैं। पौलुस को अग्रिप्पा के सामने लाया जाता है। 3. पौलुस उसे अपने जीवन की कहानी बताते हैं। **(26: 1-23)** 4. फेस्तुस कहता है कि वह पागल है ! अग्रिप्पा स्वीकार करता है कि वह लगभग एक ईसाई होने के लिए राजी हो गया है। दोनों सहमत हो सकते हैं कि पौलुस को मुक्त किया जा सकता है। लेकिन क्योंकि उन्होंने कैंसर से अनुरोध की है तो उसे रोम में जाना पड़ेंगे। 5. फेस्तुस के सामने पौलुस की प्रतिवाद और फैसले पर ध्यान दे। **(26: 24,25)** विचार करें कि पौलुस ने अग्रिप्पा को एक मसीही होने के लिए कैसे प्रेरित किया। 6. इस बारे में सोचें कि कैसे पौलुस ने अग्रिप्पा के बयान का जवाब दिया। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 3 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** 'लगभग राजी हो गए' शीर्षक के साथ एक चर्च पोस्टर बनाएं।	**छात्रों के लिए प्रश्न:** अध्ययन पर प्रतिबिंबित करें और निम्नलिखित वचन पर चर्चा करें:'समझाना जबरदस्ती से बेहतर है' यह वचन और जो हमने इस अध्ययन में सीखा उसमे क्या संबंध है?
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. विचार करे की इस पाठ में सुसमाचार के प्रचारण के लिए पौलुस का समीपन हमें कैसे चुनौती दे सकता है? हमारे समीपन में क्या समायोजन किया जाना चाहिए ? 2. एक स्कीट/नाटक करें जहां छात्र एक दूसरे को मसीही बनने के लिए मनाने की कोशिश कर रहा है।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. प्रेरितों की पुस्तक में सुसमाचार संदेश के प्रति रोमन अधिकारियों और यहूदी अधिकारियों के दृष्टिकोण की अंतर पर चर्चा करें। सुसमाचार पर लोगों की प्रतिक्रियाओं के बारे में इस सबक से हम क्या सीख सकते है। 2. विचार करें कि आज का सबक सुसमाचार को बताने में हमें चुनौती देता है।

	A11 – लेवल 3 कहानी 4 - पौलुस का अभियान विषय: जहाज़ की तबाही।	A11 – लेवल 4 कहानी 4 - पौलुस की परीक्षा विषय: भूमध्यसागर में जहाज की तबाही।
	बाइबल फोकस: प्रेरितों 27: 13,14, 20-44; 28: 1-9 ***मुख्य पद : प्रेरितों 27: 25*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. परमेश्वर हमें हर स्थिति में सामना करने में मदद करने का वादा करता है। 2. परमेश्वर के इच्छाएं हमेशा पूरा होते हैं।	***बाइबल फोकस: प्रेरितों 27: 1-44; 28: 1 -10; 28-31*** ***मुख्य पद : प्रेरितों 27: 24,25*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. परमेश्वर हमारी जीवन की हर परिस्थिति के नियंत्रण में है और हमें मदद करने का वादा करता है। 2. कुछ लोगों कि सुसमाचार की अस्वीकृति दूसरों को सुसमाचार सुनने के लिए मौका बन सकता है।
पहचान कराने	बच्चों से पूछें अगर किसी ने भी तूफान का अनुभव किया है और तब उसने कैसे महसूस कि और क्या उन्होंने परमेश्वर से बचाव के लिए प्रार्थना किया था? पौलुस के जहाज़ की तबाही की अनुभवों का वर्णन कीजिए।	बच्चों के साथ डर के विचार पर चर्चा करें। उनसे अपने सबसे बुरे भय का वर्णन करने के लिए कहें। भयभीत स्थितियों के बीच में परमेश्वर के वादे के महत्व पर विचार करें। **(भजन संहिता 23:4)**
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. पौलुस अब रोम के लिए अपनी समुद्रयात्रा पर है। पौलुस उन्हें सलाह देते हैं कि सर्दियों में यात्रा जारी न करें लेकिन कोई उसे नहीं सुनता। 2 . एक जबरदस्त तूफान आया जो कई दिनों तक चली। एक रात पौलुस को एक दर्शन मिला और उसे बताया गया कि जहाज में सभी सुरक्षित होंगे। उसने सबको बताया कि वह ईश्वर पर विश्वास रखता है और सबकुछ उसी तरह होगा जैसे उन्होंने दर्शन में देखा था। 3. आखिरकार वे माल्टा के करीब आए। जहाज को टिकाया और सभी 276 सुरक्षित किनारे पर पहुंचने में कामयाब रहे। 4. माल्टा के लोग बहुत दयालु थे। और पौलुस ने द्वीप पर कुछ अलौकिक कार्य की। 5. इस बात पर ध्यान दें कि कैसे तूफान के दौरान परमेश्वर ने पौलुस को प्रोत्साहित किया। 6. जोर दे कि कैसे मसीही कठिनाइयों से मुक्त नहीं हैं। 7. विचार करें कि जब हम जीवन के तूफानों से गुज़र रहे हैं तो हमे भी परमेश्वर की सम्मुख और शक्ति को जान सकते हैं। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 4 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. पौलुस अब रोम के लिए अपनी समुद्रयात्रा पर है। वे क्रेते पर पहले से ही कठिनाइयों का अनुभव कर रहे थे तो पौलुस उन्हें सलाह देते हैं कि सर्दियों में यात्रा जारी न करें लेकिन कोई उसे नहीं सुनता। 2 . एक जबरदस्त तूफान आया जो कई दिनों तक चली। नाविकों ने बचाया जाने की आशा छोड़ दी। 3 . एक रात पौलुस को एक दर्शन मिला और उसे बताया गया कि जहाज में सभी सुरक्षित होंगे। उसने सबको बताया कि वह ईश्वर पर विश्वास रखता है और सबकुछ उसी तरह होगा जैसे उन्होंने दर्शन में देखा था। 14 दिनों भूखे रहने के बाद उन्हें खाने के लिए प्रोत्साहित किया और फिर किनारा दिखने लगा। 4. आखिरकार वे माल्टा के करीब आए। जहाज को टिकाया और सभी 276 सुरक्षित किनारे पर पहुंचने में कामयाब रहे। 5. माल्टा के लोग बहुत दयालु थे। और पौलुस ने द्वीप पर कुछ अलौकिक कार्य की। 6. इस बात पर ध्यान दें कि कैसे तूफान के दौरान परमेश्वर ने पौलुस को प्रोत्साहित किया। 6. जोर दे कि कैसे मसीही कठिनाइयों से मुक्त नहीं हैं। 7. विचार करें कि जब हम जीवन के तूफानों से गुज़र रहे हैं तो हमे भी परमेश्वर की सम्मुख और शक्ति को जान सकते हैं। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 4 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** बच्चों को कल्पना करने के लिए कहें कि वे पौलुस हैं। उन्हें उन मित्र को एक पत्र लिखने के लिए कहें जो समस्याओं का अनुभव कर रहे हैं। उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए रोम के मार्ग की तूफ़ान से निकलने का अनुभव का उपयोग करें।	**छात्रों के लिए प्रश्न:** **2 कुरिन्थियों 11: 21-33** और **2 तीमुथियुस 4: 16-18** पढ़े और बच्चों के साथ चर्चा करें कि ये दो अंश एक-दूसरे से कैसे संबंधित हैं।
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. पूछें कि कैसे पौलुस जहाज की तबाही कि कहानी हमें प्रोत्साहन और चुनौती देती है। 2. बाइबल की दूसरे कहानियों (युसूफ, दानिय्येल आदि) में परमेश्वर कठिन समय से लोगों को सुरक्षित रकने के बारें में हम क्या सबक सीख सकते हैं। 3. हमारे जीवन में अपनी कृतज्ञता के लिए परेश्वर को धन्यवाद देने की प्रार्थना लिखें।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. पौलुस के जीवन कि घटनाओं के बारें में सोचें और ध्यान दें कि परमेश्वर की विश्वसनीयता उसके जीवन को प्रकाशित करता है। 2. शब्द 'दृढ़ता' के अर्थ को शब्दकोश में देखे। इसे पौलुस के जीवन में कैसे देखा जाता है? बच्चों को यह चुनौती दे कि वे इस विषय पर पौलुस के साथ कैसे तुलना करत

	A12 – लेवल 3 कहानी 1 - पहला क्रिसमस विषय: असम्भव।	A12 – लेवल 4 कहानी 1 - उद्धारकर्ता का जन्म विषय: स्वर्गदूत के सन्देश।
	बाइबल फोकस: लुका 1: 5-20, 57-66 ***मुख्य पद : लुका 1: 37*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. जकरयाह और इलीशिबा एक बुजुर्ग जोड़ी थी, जिन्हे अपनी प्रार्थनाओ का उत्तर परमेश्वर से मिलने का अनुभव हुआ। 2. परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं है।	***बाइबल फोकस: मत्ती 1: 18-25 ; लूका 1: 26-38*** ***मुख्य पद : मत्ती 1: 21*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. एक स्वर्गदूत ने यीशु के जन्म का एकदम सही भविष्यवाणी किया। उसने होने वाले पिता को बच्चे के जीवन के बारे में महत्वपूर्ण विवरण बताया। 2. मरियम को भी बताया गया था कि वह पवित्र आत्मा के अनुग्रह से गर्भवती होंगी।
पहचान कराने	इस विषय के बारे में बात करें कि कैसे कभी कभी लोगों को परमेश्वर से अपनी प्रार्थनाओं का जवाब मिलने के लिए प्रतीक्षा करना पड़ते हैं। जकरयाह और इलीशिबा के परिस्थिति की व्याख्या करें की कैसे अपनी प्रार्थना का उत्तर के लिए उन्हें इतने लंबे समय के लिए इंतजार करना पड़ा कि यह लगभग असंभव लग रहा था।	उन तरीकों के बारे में सोचें जो दुनिया भर में बड़ी घटनाओं को लगभग उसी समय प्रसारित करने में सहायता करती है। हालांकि घटना से पहले कोई भी भविष्यवाणी नहीं कर पाते की आगे क्या होगा। लेकिन परमेश्वर कर सकते हैं। युसूफ और मरियम दोनों को यीशु के जन्म के बारे में उसके पैदा होने से पहले ही परमेश्वर ने सन्देश भेजे।
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. समझाओ कि जकरयाह और इलीशिबा चाहते थे की उन्हें बच्चों हो। बच्चों को समझाएं की बाइबल के समय मध्य पूर्व देशों में किसी को बच्चे न होना कितनी शर्म और दुःख की बात हुआ करती थी। 2. मंदिर में काम करने वाले एक याजक होना जकरयाह के लिए एक सौभाग्य था। 3. एक दिन जकरयाह के सामने एक स्वर्गदूत प्रकट हुआ और वह घबरा गया। स्वर्गदूत उसे बताया की एलिजाबेथ को एक पुत्र होगा जो परमेश्वर की दृष्टि में महान होगा, और प्रभु के लिए एक योग्य प्रजा तैयार करेगा। **(लुका 1:17)** 4. वह जकरयाह हैं कि बच्चे होने के लिए वे बहुत बूढ़े हैं। स्वर्गदूत कहते हैं कि क्योंकि उसने प्रभु के वचन पर विश्वास नहीं किया तो जब तक उन्हें बच्चा नहीं होता वह गूंगा रहेगा। 5. बच्चा होने पर एलिजाबेथ कहा की उसका नाम यूहन्ना होगा और हिजकिय्याह ने इसका पुष्टि लिखित रूप दी। जैसे ही वह ऐसा किया वह बोलने लगे और पवित्र आत्मा से भर गया और उसने यूहन्ना के बारें में भविष्यवाणी दिया। 6. पड़ोसियों, दोस्तों की प्रतिक्रिया पर विचार करें। **(1:65,66)** 7. सन्देश सुनने पर जकरयाह और इलीशिबा की प्रतिक्रियाओं में अंतर क्या था। हम इससे क्या सीख सकते हैं? **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 1 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. मरियम और युसूफ मंगनी थे। तब मरियम को एक स्वर्गदूत से संदेश मिलता है कि वह पवित्र आत्मा के अनुग्रह से एक पुत्र को जन्म देने वाली है। 2. युसूफ यह सुनकर चुपचाप उसे तलाक देना चाहता है। लेकिन एक सपने में उसे बच्चे के जन्म के बारे में बताया जाता है, उसके पैदा होने का कारण और वह भविष्यवाणी जो उसके जन्म में पूरी की जाएगी। 3. युसूफ और मरियम दोनों ने उस सन्देश पर विश्वास किया। और निर्देश के अनुसार युसूफ ने बच्चे को नाम यीशु रखा क्योंकि वह लोगों को अपने पापों से उद्धार दिलाएंगे । 4. तीन प्रश्नों पर विचार करें: a) यीशु ने सामान्य तरीके के बजाय पवित्र आत्मा द्वारा अद्भुत रूप से जन्म क्यों लिया? b) युसूफ और मरियम को उनके सांसारिक माता-पिता होने के लिए क्यों चुने गए? **(मत्ती 1 और लूका 3** में उनके पूर्वजों की सूची को देखो) c) परमेश्वर ने अपने इकलौता पुत्र को इस दुनिया में क्यों भेजा हैं ? **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 1 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** 'असंभव संभव हो गया' के शीर्षक के नीचे बच्चों से उन चीजें लिखने को कहे, जो वास्तव में हुआ जब उन्होंने सोचा कि यह असंभव होगा। उसके नीचे लिखिए: 'धन्यवाद प्रभु'	**छात्रों के लिए प्रश्न:** आज के अध्ययन से आप ने क्या सबक सीखा और इसे अपने जीवन में कैसे प्रयोग कर सकते हैं? हमारे जीवन में प्रभु यीशु की आगमन का क्या महत्व है? अपने पुत्र को भेजने और जो कुछ भी परमेश्वर ने हमारे लिए किया उसके लिए हमेशा प्रार्थना द्वारा धन्यवाद करें। **2 कुरिन्थियों 9:15**
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. इस अध्ययन से हम क्या सीखे ? 2. क्या आपको लगता है कि स्वर्गदूतों आज भी दिखाई देती हैं? क्यों/क्यों नहीं?	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. क्या कभी परमेश्वर ने तुम्हें या किसी जान-पहचान वालों से कभी ऐसे कुछ कहा जिस पर विश्वास करना मुश्किल था? 2. इस अध्ययन कि वह कौनसे भविष्यवाणियां थी जो प्रभु यीशु के आने पर पूरा हुआ था?

	A12 – लेवल 3 कहानी 2 - पहला क्रिसमस विषय: एक विशेष कर्तव्य।	A12 – लेवल 4 कहानी 2 - उद्धारकर्ता का जन्म विषय: सम्राट की आज्ञा।
	बाइबल फोकस: लूका 1: 26 -38 ***मुख्य पद : लूका 1: 38*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. मरियम और युसूफ एक बहुत ही खास दंपति थे, जिसे परमेश्वर ने उल्लेखनीय तरीके से उपयोग किया था। 2. यीशु का जन्म, परमेश्वर का पुत्र, एक चमत्कार था।	***बाइबल फोकस: लूका 2: 1-7*** ***मुख्य पद : लूका 2: 7*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. रोमन साम्राज्य के शासकों को कैसर कहते हैं। 2. कैसर ने एक आज्ञा निकाला और इस के लिए मरियम और युसूफ को नाम रजिस्ट्री कराने के लिए बैतलहम जाना पड़ा। इससे पुरानी नियम कि एक भविष्यवाणी पूरा हुआ।
पहचान कराने	बच्चा पैदा होने पर सबसे पहले करने वाले कार्यों में से सबसे अहम है बच्चे को एक नाम देना है। यीशु को कई नाम या शीर्षक से जाने जाते हैं। **लुका 1,2 और मत्ती 1,2** में यीशु के जन्म के विवरण दिय भागों को पढ़े और उनके कुछ नाम और शीर्षक का एक सूची बनाएं। इस में से आपको सबसे पसन्द कौनसा है और क्यों ?	इस बाइबल अध्ययन में उल्लिखित सभी जगहों और लोगों के नाम लिखिए।
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. मरियम शायद एक किशोरी है जिसका मँगनी युसूफ के साथ हुआ है। 2. उसे मिलने जिब्रईल स्वर्गदूत आते है और जब वह सुनती है कि ईश्वर का अनुग्रह उस पर है तो वह घबरा गई। 3. स्वर्गदूत कहता है कि वह एक ऐसे बच्चे को जन्म देंगी जिसका नाम यीशु रखना है। वह परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा और पूर्वज दाऊद का सिंहासन उसका होगा। 4. मरियम उलझन में है क्योंकि वह अभी भी कुंवारी है। लेकिन स्वर्गदूत बताते हैं कि बच्ची पवित्र आत्मा कि अनुग्रह से गर्भवती होगी। 5. मरियम की प्रतिक्रिया ग़ज़ब है वह कहती है, 'मुझे तेरे वचन के अनुसार हो' 6. मरियम कि मन में क्या चल रही होगी जब स्वर्गदूत ने उसे बताया कि परमेश्वर का अनुग्रह उस पर हैं और पवित्र आत्मा के अनुग्रह से वह गर्भवती होगी। **पद 46, 47** देखिए। 7. 'परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं है।' कुछ ऐसे अन्य बाइबल के शिशुओं के बारे में सोचें जो मानवीय नज़र में असंभव परिस्थितियों में पैदा हुए थे। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 2 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. मरियम और युसूफ दोनों राजा दाऊद की वंश के थे। और जब कैंसर ने आदेश दिया उन्हें जन गणना के लिए बैतलहम जाना पड़ा। 2. यह कम से कम 70 मील की दूरी पर था और मरियम जो गर्ब्वती है उसके लिए बहुत ही मुश्किल यात्रा थी। संभव है कि बैतलहम बहुत भीड़ से भरे थे इस लिए वे कही भी बसने के लिए मजबूर थे। शायद किसी प्रकार की तबेला या गुफा में। 3. यहाँ यीशु सबसे विनम्र, गरीब परिस्थितियों में पैदा हुआ था 4. उन सारी चीजों के बारे में सोचें जो बैतलहम में यीशु के जन्म से पहले संभव होना था ठीक उसी तरह जैसे मीका ने कहा और परमेश्वर की शक्ति पर चकित हो जिन्होंने इन सबका पूर्तिकरण किया। **(मीका 5:2)** 5. **यूहन्ना 3: 16 और गलतियों 4: 4** पढ़ो और इनके अर्थ के बारे में सोचो ताकि सभी को इस महान घटना को समझने में मदद कर सके। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 2 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** इन सवालों के जवाब दें: 1. स्वर्गदूत का नाम क्या था? 2. सन्देश के लिए मरियम की पहली प्रतिक्रिया क्या थी? 3. उसे कुछ समय बाद कैसा महसूस हुआ? **(पद 46,47)**	**छात्रों के लिए प्रश्न:** इन सवालों के जवाब दें: 1. आपके शहर से मील दूर एक शहर के नाम बताएं ? 2. अगर उतने दूर किसी को पैदल चलना पड़े थो क्या होगा? 3. यीशु के जन्म के परिवेश और आधुनिक जन्म में क्या अंतर ?
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** इस बाइबल अध्ययन में उल्लिखित सभी जगहों और लोगों के नाम लिखिए क्ष और इन नामों कि महत्व के बारें में चर्चा करें।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** यात्रा के दौरान जो कुछ हुआ उसके बारे में युसूफ के परिप्रेक्ष्य से मरियम पर ध्यान केंद्रित करके एक निबंध लिखें।

	A12 – लेवल 3 कहानी 3 - पहला क्रिसमस विषय: बैतलहम में।	A12 – लेवल 4 कहानी 3 - उद्धारकर्ता का जन्म विषय: चरवाहों का आगमन।
	बाइबल फोकस: लूका 2: 1-20 ***मुख्य पद : 2: 11*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. यह परमेश्वर की योजना में था कि यीशु गरीब और कठिन परिस्थितियों में पैदा होंगे 2. परमेश्वर सभी के नियंत्रण में था और आज भी है।	***बाइबल फोकस: लूका 2: 8 - 20*** ***मुख्य पद : लूका 2: 11*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. स्वर्गदूत चरवाहों को दिखाई दिया जब वे अपने कार्यों से व्यस्त थे। 2. जो उन्होंने सुना उस पर विश्वास किया और तुरंत कार्रवाई की।
पहचान कराने	बच्चों को इतिहास की सबसे बड़ी घटनाओं के नाम करने के लिए कहें समझाओ कि परमेश्वर के पुत्र का जन्म एक बड़ी घटना थी। इस अध्ययन के सभी घटनाओं को प्रदर्शित करने के लिए समयरेखा/घट नाक्रम तैयार करें।	इस सबक कि कहानी के आदार पर एक नाटक बनाएं।
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. मरियम और युसूफ दोनों राजा दाऊद की वंश के थे। और जब कैंसर ने आदेश दिया उन्हें जन गणना के लिए बैतलहम जाना पड़ा। 2. यह कम से कम 70 मील की दूरी पर था और मरियम जो गर्ब्वती है उसके लिए बहुत ही मुश्किल यात्रा थी। 3. संभव है कि बैतलहम बहुत भीड़ से भरे थे इस लिए वे कही भी बसने के लिए मजबूर थे। शायद किसी प्रकार की तबेला या गुफा में। यहाँ यीशु सबसे विनम्र, गरीब परिस्थितियों में पैदा हुआ था 4. शायद जन्म रात में हुआ था और चरवाहों उन कुछ लोगों में से है जो जागत थे। 5. उन्हें उद्धारकर्ता - प्रभु मसीह, के जन्म की खबर मिली। 6. स्वर्गदूतों का दल स्तुति करते हुए चरवाहों को दिखाई दिया। 7. चरवाहों ने बैतलहम जाकर देखने का फैसला किया। उन्होंने वहां मरियम, युसूफ और बालक से मिला। 8. उन्होंने जो कुछ भी देखा उसका खबर प्रगट करके परमेश्वर की स्तुति और महिमा करते हुए लौट गए। 9. स्वर्गदूतों का पहला अभिवादन जो यहां और अन्य बाइबल भागों में दर्ज किया गया है उस पर विचार करें। 10. इस बारे में सोचें कि युवा जोड़े को अपनी यात्रा पर कैसे अनुभवों से गुज़रना पड़ा। 11. चर्चा करें की चरवाहों कि कहानी से क्या सीखा जा सकता है। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 3 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. शायद जन्म रात में हुआ था और चरवाहों उन कुछ लोगों में से है जो जागत थे। 2. उन्हें उद्धारकर्ता - प्रभु मसीह, के जन्म की खबर मिली। 3. स्वर्गदूतों का दल स्तुति करते हुए चरवाहों को दिखाई दिया। 4. चरवाहों ने बैतलहम जाकर देखने का फैसला किया। उन्होंने वहां मरियम, युसूफ और बालक से मिला। 5. उन्होंने जो कुछ भी देखा उसका खबर प्रगट करके परमेश्वर की स्तुति और महिमा करते हुए लौट गए। 6. ये सोचें कि परमेश्वर ने स्वर्गदूतों के माध्यम से इन लोगों को तब मिला जब वे अपने काम कर रहे थे। आज हमारे दैनिक जीवन के काम के बीच में भी परमेश्वर हम से बात कर सकते है। 7. जब हम यह सुनते हैं कि परमेश्वर ने हमारे लिए क्या किया है, हमें दूसरों को बताना चाहिए। **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 3 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** इन सवालों के जवाब दें: 1. आपको क्यों लगता है कि स्वर्गदूतों ने लोगों ऐसे क्यों अभिवादन किया जैसे **पद 10** में बताया गया हैं ? 2. क्या आप सोचते हैं कि आज भी परमेश्वर स्वर्गदूतों के माध्यम से चरवाहों जैसे साधारण लोगों से बात करते हैं? 3. आपको क्या लगता है की मरियम कि मन में क्या चल रहा होगा? **(पद 19)**	**छात्रों के लिए प्रश्न:** इन सवालों के जवाब दें: 1. आपको क्या लगता है की स्वर्गदूत उन्हें छोड़ते ही चरवाहों ने इतनी जल्दी कार्यवाही क्यों किया? 2. चरवाहों को उनकी त्वरित कार्रवाई के लिए आशीष दी गई थी। क्या आप **पद 20** आधुनिक काल के शब्दों में डाल सकते हैं? 3. आप क्या सोचते हैं कि मरियम के मन में क्या था? **(पद 19)**
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** मान लो की तुम एक चरवाहा हो। पद 8 -17 का उपयोग से एक कहानी लिखो जो भी आपने सुना, देखा और महसूस किया उसका वर्णन करता है	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** एक डायरी रखने पर विचार करें और जब भी परमेश्वर आपसे बात करते हैं उसमे लिखें । ताकि भविष्य में आपके जीवन में परमेश्वर की प्रवर्ति देखकर आप प्रोत्साहित हो सके।

	A12 – लेवल 3 कहानी 4 - पहला क्रिसमस विषय: मंदिर में।	A12 – लेवल 4 कहानी 4 - उद्धारकर्ता का जन्म विषय: ज्योतिषियों की भेंट।
	बाइबल फोकस: लूका 2: 22-40 ***मुख्य पद : लूका 2: 30*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. शमौन और हन्ना यीशु के जन्म से बहुत खुश हुए क्योंकि वे इसका महत्व समझते थे। 2. यीशु को दुनिया में भेजने के लिए हमें परमेश्वर का शुक्रिया अदा करना जरूरी है।	***बाइबल फोकस: मत्ती 2: 1-23*** ***मुख्य पद : मत्ती 2: 11*** **हम सीख रहे हैं कि:** 1. हालांकि ज्योतिषयों ने बहुमूल्य चीज़े लाए थे यीशु ही असली खजाना था। 2. ये पुरुष समझ गए कि यीशु बहुत ही विशिष्ट व्यक्ति था।
पहचान कराने	बच्चा पैदा होने पर सभी के उत्साह के बारे में सोचें? यीशु के जन्म अलग क्यों था? समझाओ कि यहूदी कानून के आदार पर बच्चे का नाम देने, शुद्धि के लिए और परमेश्वर का धन्यवाद देने माता-पिता को मंदिर जाना पड़ता था।	एक बच्चा पैदा होने पर सभी के उत्साह के बारे में सोचो। नए बच्चे को देखने के लिए यात्रा करते परिवार और दोस्तों के बारे में चर्चा करें । बच्चे को देखने के लिए ज्योतिषियों ने किए लम्बे सफर के बारें में समझाएं। इस बात के बारे में सोचें कि इस कहानी में परमेश्वर हमेशा शैतान के एक कदम आगे थे। इस अध्ययन में से उदाहरणों कि एक सूची बनाएं
पूरा करने	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. यीशु के जन्म के बाद उन्हें यरूशलेम में मंदिर ले जाया गया। 2. मरियम और युसूफ दोनों से बच्चे के नाम यीशु रकने को कहा गया और उसने वही किया। अब वे प्रभु की व्यवस्था के अनुसार बलिदान देते हैं। 3. वे शमौन से मिले, जिन्हें बताया गया था कि जब तक वह प्रभु मसीह को नहीं देखें तब तक उसका मृत्यु नहीं होगा। 4. उसने अपनी बाहों में बच्चे को ले लिया और परमेश्वर की प्रशंसा की क्योंकि वह मानता था कि यीशु उद्धारकर्ता हैं। 5. वे अन्ना नाम की एक बूढ़ी महिला से भी मिले। जिसने भी भगवान का धन्यवाद दिया और 'जेरुसलेम के विमोचन की प्रतीक्षा करने वाले सभी को बच्चे के बारे में बताया' 6. विचार करें कि शमौन और हन्नाह दोनों जानते थे कि यीशु विशिष्ट व्यक्ति था। 7. उन चीजों के बारे में सोचे जो उन्होंने कहा कि यीशु के साथ होगा। (पद 31-38) **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **पाठ 4 को पूरा करें।**	**बाइबल की कहानी को प्रस्तुत करें।** **चर्चा और व्याख्या करें:** 1. ज्योतिषियों ने पूर्व में एक तारा देखा था और उनके अध्ययन से उसने फैसला किया की एक नया राजा पैदा हुआ है। और वे उसे प्रणाम करने चाहते थे 2. वे यरूशलेम की महल में हेरोदेस से मिलने गए यह मानते हुए कि नए राजा वहां होंगे। 3. हेरोदेस परेशान है यह सोचकर कि उसे एक प्रतिद्वंद्वी है, लेकिन धार्मिक लोगों के माध्यम से उन्हें **मीका 5:2** और बैतलहम में राजा के जन्म के बारें में बताया गया। 4. ज्योतिषियों बैतलहम जाते हैं, बच्चे से मिलते है और अमूल्य चीज़ों की भेंट चढ़ाते हैं। 5. उन्हें सपने में चेतावनी दी जाती है कि वे दूसरे रास्ते पर अपने घर वापस जाएं और जो भी उन्होंने देखा उसके बारें में हेरोदेस को नहीं बताएं। 6. युसूफ से मरियम और बच्चे को सुरक्षा के लिए मिस्र ले जाने के लिए कहा जाता है। 7. हेरोदेस को पता चलता है कि उन्हें धोखा दिया गया है और उन्होंने दो साल के उम्र कि बैतलहम के सारे बच्चों को मार डालने की आदेश दिया। 8. आखिरकार युसूफ को बताया गया है कि नासरत वापस आकर रहना अब सुरक्षित हैं। 9. विभिन्न भविष्यवाणियों को देखे और चर्चा करें कि कैसे परमेश्वर ने सैकड़ों वर्ष पहले की इन सारे चीज़ो कि योजना बनाई थी। 10. यह भी सोचें कि कैसे हेरोदेस शैतान के काम कर रहा था। **(पद 5,6,15,17,18** को देखें) **मुख्य पद का व्याख्या कीजिये और छात्रों को इसे स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।** **अध्याय 4 को पूरा करें।**
पुनरवलोकन करने	**छात्रों के लिए प्रश्न:** शमौन ने कहा कि वह एक प्रकाश देने के लिए ज्योति होगा। सभी सकारात्मक चीजों के बारे में सोचें जो प्रकाश करता है। अब उन्हें पद 32 को किस तरह अलग तरीके से देख सकते हैं? बच्चों को यह प्रार्थना करने के लिए चुनौती दें कि परमेश्वर उनकी ज़िंदगी में अधिक प्रकाश भेज दे। उन्हें उन निश्चित क्षेत्रों के बारे में सोचने के लिए कहे जहां उन्हें मदद की आवश्यकता होती है और यह एक प्रार्थना में बदलने के लिए प्रोत्साहित करें।	**छात्रों के लिए प्रश्न:** यीशु को दिए गए उपहारों पर विचार करें : सोना यह प्रस्ताव करता है कि वह राजा है। लोबान यह प्रस्ताव करता है कि वह उद्धारकर्ता है जिसे पीड़ा सहकर मरना होगा। और गन्धरस यह प्रस्ताव करता है कि वह परमेश्वर है जिसका आराधना हम करते है। विचार करें की कैसे यीशु खजाना की तरह है। जो कोई उसे उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में स्वीकार करेगा, उसे से लिए वह एक मुफ्त सौगात है। जो कोई उसे उद्धारकर्ता और भगवान के रूप में स्वीकार करेगा, उसे एक मुफ्त उपहार
पालन करने	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. आप इस अध्याय से क्या सीख सकते हैं जो आपके जीवन में लागू कर सकते हैं? 2. याद रखना उद्धार का मतलब सम्पूर्णता है और यह वह घटना नहीं है जो जीवन में एक बार होता है बल्कि एक जीवनकाल प्रक्रिया है।	**यह पाठ हमें कैसे चुनौती देता है:** 1. सोचो कि हम प्रभु यीशु को भेंट के रूप में क्या ला सकते हैं। 2. हर रोज़ कि उदाहरण / उपाख्यानों की चर्चा करें जिसमें शैतान धोखेबाज है। और उसके काम करने की तरीके के बारे में हमेशा आगाह रहें।

पाठ को अंकन करने शिक्षको केलिए मार्गदर्शन

लेवल 3 पाठः

- हर हफ्ते एक/दो पन्ने को मुख्य रूप से रंग भरने या सवालों के जवाब देने।
- हर हफ्ते 10 अंक निर्धारित किए है और एक महीने में अधिकतम 40 अंक।
- लेवल 1 के बच्चों को अक्सर पढने में तकलिफ हो सकता है इसलिए हम चाहते है कि माता-पिता/ रक्षक/शिक्षक उनके सहायता करे।
- हम हर सवाल केलिए 2 अन्क निर्धारित किए है और शेष अन्क रंग भरने केलिए ऐक अध्याय केलिए 10 अन्क।

लेवल 4 पाठः

- हर हफ्ते 4 पन्ने।
- कहानी पाठ में ही निहित है। बच्चों को पहेली सुलझाने, रंग भरने, मुख्य पद को पूरा करना है।
- 20 अन्क हर हफ्ते केलिए निर्धारित है और एक महीने केलिए अधिकतम 80 अन्क।

बाइबल टाइम के मार्किन्ग

निर्देशः

शिक्षक पहलेः

- पाठ को जाँच कर चिन्हित करे।
- निर्देश अनुसार आवश्यक अन्क है।
- गलत जवाब के पास चिन्हित करे और सही जवाब भी लिखे।
- आन्शिक रूप से सही उत्तर केलिए एक अन्क दे।
- एक महीने के कुल अन्क के दिए हुए जगह में लिखो।

P.O Box - 9, MOOKANNUR P.O., 683577, Ernakulam, KERALA
E-mail : besindia1@gmail.com, www.besweb.com